HINDI

SECTION A

Question 1.

Write a composition in HINDI in approximately 400 words on any ONE of the topics given below:- [20]

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 400 शब्दों में **हिन्दी** में निबन्ध लिखिये:–

(a) आधुनिक युग में विवाह समारोहों पर भारी धन खर्च किया जाने लगा है। आपने अभी अभी एक ऐसा ही विवाह समारोह देखा है जिसमें अत्याधिक खर्च किया गया। आपके विचार में वहां पर किए गए किन किन खर्चों को किस प्रकार कम किया जा सकता था। विस्तार से लिखिए।

(b) बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है जो विनाश कर डालती है । इस पर एक सारगर्भित प्रस्ताव लिखिए।

(c) व्यक्ति की उन्नति में संस्कारों, शिक्षा एवं सामाजिक परिवेश का योगदान होता है । इस विषय का विवेचन कीजिए।

(d) कहा जाता है, उधार लेना और देना दोनों ही गलत हैं । इस विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखें।

(e) समय के महत्त्व को जिसने नही समझा, वह जिन्दगी की दौड़ में पीछे रह जाता है । इस विषय का विवेचन कीजिए।

(f) निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर मौलिक कहानी लिखिए:–

(i) चढ़ते सूरज को सब सलाम करते हैं।

(ii) एक कहानी लिखिए जिसका अन्तिम वाक्य होगा .... बस संयुक्त परिवार का यही लाभ होता है।

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

(a) इस विषय पर कुछ परीक्षार्थियों द्वारा उत्तम वर्णन किया गया। कुछ ने विवाह समारोह के बारे में लिखा किन्तु विषय के अनुसार सभी भागों को निबन्ध में नहीं बताया गया।

(b) बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है – इस पर अधिक न लिखकर, परीक्षार्थियों द्वारा बाढ़ से विनाश के बारे में अधिक लिखा था। बाढ़ आने के कारणों को कई छात्रों द्वारा नहीं बताया गया।

(c) इस विषय पर कम परीक्षार्थियों द्वारा लिखा गया। छात्रों के द्वारा संस्कारों व 'सामाजिक परिवेश', दोनों को मिला दिया गया। 'शिक्षा' का महत्व उत्तम तरीके से समझाया गया।

(d) इस विषय पर परीक्षार्थियों की सोच स्थिर नहीं लगी। उन्होंने उधार लेने को बुरा कहा तो वहीं उधार लेने की मजबूरी भी बतायी, जबकि प्रश्न में स्पष्ट था की विषय के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखें।

(e) समय के महत्त्व पर परीक्षार्थियों ने सबसे अधिक व उत्तम रूप से लिखा। कहीं–कहीं विस्तार वर्णन का अभाव था – शब्दों की सीमा पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>

- कक्षा में निबन्ध शैली व आवश्यक बिन्दु समझाकर लेखन – अभ्यास कराया जाए।
- छात्रों को निबन्ध को ध्यान से पढ़कर सभी बिन्दुओं पर प्रस्तुति हेतु प्रेरित किया जाए। निबन्ध लेखन कला का अभ्यास होना अति आवश्यक है।
- कक्षा मे तर्क प्रदान विषयों को समझाया जाए व एक पक्ष लिखने की प्रेरणा व ज्ञान दिया जाए। छात्रों को बताऐ कि वे जिस भी विषय पर सहमति रखते हैं, केवल वही लिखें, भ्रामक विचाराभिव्याक्ति न हो।
- ये अभ्यास कराया जाए की 400 शब्दों में कितना वर्णन किया जा सकता है। अधिक लिखा जाने पर अन्य प्रश्नों के लिए समयाभाव हो जाता है।

bodhiyla.com

(f) (i) 'चढ़ते सूरज को सब सलाम करते हैं', यह एक मुहावरा है। बहुत से छात्रों ने उसका शाब्दिक अर्थ लेते हुए सूर्यदेवता की उपासना, उन्हें जल चढ़ाना, जैसी बातों की चर्चा की।

(ii) इस प्रश्न में छात्रों को संयुक्त परिवार व्यवस्था के लाभ प्रदर्शित करती हुई, एक कहानी लिखनी थी। संयुक्त परिवार के लाभ से अधिकतर छात्र परिचित थे परन्तु कहानी लेखन के तत्वों का आभाव पाया गया।

– कहानी–लेखन का अभ्यास कराया जाए व कहानी के तत्वों, कथावस्तु कथोपकथन, भाषाशैली, उद्धेश्य, संवाद सभी पर ध्यान दिया जाए व कथा में शामिल की जाए।

अंक योजना

Question 1

अंक विभाजनः

- भूमिका
- विषय वर्णन
- प्रस्तुतिकरण
- भाषा
- उपसंहार

प्रस्तावना और उपसंहार का अलग–अलग अनुच्छेद होना अनिवार्य है।

निबन्ध में मौलिकता, भाषा, उद्वत पंक्तियाँ कथन की पुष्टि हेतु अंक दिये गए हैं।

कहानी में मौलिकता होनी चाहिए।

bodhiyla.com

Question 2.

Read the following passage and answer the questions that follow :-

निम्नलिखित अवतरण पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :–

परोपकार प्रकृति का सहज स्वाभाविक नियम है। जलवायु, मिट्टी, वृक्ष, प्रकाश, पशु, पक्षी आदि प्रकृति के सभी अंग किसी न किसी रूप में दूसरों की भलाई में तत्पर रहते हैं।

अर्थात् वृक्ष परोपकार के लिये फलते हैं, नदियाँ परोपकार के लिये बहती हैं, गाय परोपकार के लिये दूध देती है। यह शरीर भी परोपकार के लिये है। वास्तव में जब प्रकृति के जीव–जन्तु निःस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई में तत्पर रहते है तब विवेकशील प्राणी होते हुए भी मनुष्य यदि जाति की सेवा न कर सके तो जीवन सफलता के लिये कलंक स्वरूप है। मनुष्य होते हुए भी मनुष्य कहलाने का उसे कोई अधिकर नहीं है।

परोपकार ही मानवता का सच्चा आदर्श है। यही सच्ची मनुष्यता है। राष्ट्रकवि गुप्तजी ने यह कहा कि ''वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिये मरे।'' मनुष्य वही है जो केवल अपने सुखःदुःख की चिन्ता में लीन नहीं रहता, केवल अपने स्वार्थ की ही बात नही सोचता, जिसका शरीर लेने के लिये नहीं देने के लिये है। उसका हृदय सागर की भाँति विशाल होता है, जिसमें समस्त मानव समुदाय के लिये प्रेम से भरा स्थान रहता है। सारे विश्व को वह अपना परिवार समझता है।

सचमुच परोपकार ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है। यदि किसी मनुष्य के हृदय में त्याग और सेवा की भावना नहीं है, उसका मन्दिरों में जाकर पूजा और अर्चना करना ढोंग आैर पाखण्ड है। प्रसिद्ध नीतिकार **सादी** का कथन है कि ''अगर तू एक आदमी की तकलीफ को दूर करता है तो वह कहीं अधिक अच्छा काम है, बजाय कि तू हज को

जाये और मार्ग की हर एक मंजिल पर सौ बार नमाज पढ़ता जाये।'' सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है कि वह दूसरों के सुख–दुःख की चिन्ता करे, क्योंकि उसका सुख–दुःख दूसरों के सुख–दुःख के साथ जुड़ा हुआ है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने स्वार्थ साधन में लिप्त न रहकर दूसरों की भलाई के लिए भी कार्य करे।

बिना किसी स्वार्थ भाव को लेकर दूसरों की भलाई के लिये कार्य करना ही मनुष्यता है। इस परोपकार के अनेक रूप हो सकते है। यदि आप शरीर से शक्तिमान हैं तो आपका कर्त्तव्य है कि दूसरों के द्वारा सताये गये दीन–दुःखियों की रक्षा करें। यदि आपके पास धन–सम्पदा है तो आपको विपत्तियों में फँसे अपने असहाय भाइयों का सहायक बनना चाहिए। भूखों को रोटी और निराश्रितों को आश्रय देना चाहिए। यदि आप यह सब कुछ करने में भी असमर्थ है तो अपने दुःखी और पीड़ित भाइयों को मीठे शब्दों द्वारा धीरज और सांत्वना प्रदान कीजिए। यही नहीं, किसी भूले हुए को रास्ता दिखा देना, संकट में अच्छी सलाह देना, अन्धों का सहारा बन जाना, घायल अथवा रोगी की चिकित्सा करना, ये सब परोपकार के महत्त्वपूर्ण अंग है। वास्तव में हृदय में किसी के प्रति शुभ विचार भी परोपकार का ही रूप है।

प्राचीनकाल में दधीचि नाम के प्रसिद्ध महर्षि थे। ईश्वर–प्राप्ति ही उनका जैसे लक्ष्य था। परन्तु परोपकार वश उन्होंने देवताओं को वज्र बनाने के लिए अपनी हड्डियाँ तक दान में दे दी थी। गुरु तेग बहादुर ने परोपकार के लिए अपना शीश औरंगजेब को भेंट कर दिया था।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रकृति से शिक्षा लें तथा अपने महापुरुषों के जीवन का अनुसरण करें। निःस्वार्थ भाव से परोपकार के कार्यों में लगें।

प्रश्न :

(a) परोपकार से आप क्या समझते हैं? गद्यांश के अनुसार किन महापुरुषों ने अपने जीवन का त्याग परोपकार के लिये किया? [4]

(b) प्रकृति के अंग किस प्रकार हमें परोपकार की शिक्षा देते हैं? [4]

(c) परोपकारी मनुष्य का स्वभाव कैसा होता है? [4]

(d) परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म किस प्रकार होता है? [4]

(e) गद्यांश के आधार पर बताइए कि परोपकार के महत्त्वपूर्ण अंग कौन से हैं, किस किस तरह से परोपकार किया जा सकता है? [4]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

(a) परोपकार का अर्थ कुछ छात्रों द्वारा नहीं समझाया गया। गद्यांश के अनुसार दोनों महापुरूषों के उदाहरण नहीं दिए गए।
(b) 'प्रकृति द्वारा परोपकार की शिक्षा' उत्तम रूप से लिखी गयी। बहुत से परीक्षार्थियों ने प्रश्न–पत्र की भाषा की नकल की। भाषा परिवर्तित करके नहीं लिखी।
(c) परोपकारी मनुष्य के स्वभाव के बारें में कई छात्रों ने अनावश्यक विस्तार से लिखा।
(d) परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म कैसे होता है उसे समझाने हेतु पूरे पैराग्राफ की नकल की गयी व अनावश्यक विस्तार दिया गया।
(e) परोपकार का क्षेत्र असीमित है, इसलिए परीक्षार्थियों द्वारा अत्याधिक विस्तृत रूप से समझाया गया जिसकी इतनी आवश्यक्ता नहीं थी।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>

– भाषा–परिवर्तन का अभ्यास कराया जाए। प्रश्नपत्र की भाषा अपने शब्दों में अभिव्यक्त करना सिखाया जाए।
– समयानुसार उत्तर लिखने व सभी बिन्दुओं को समझ कर लिखना बताएँ।
– प्रश्नपत्र में गद्यांश के अनुसार प्रश्न का उत्तर देने का अभ्यास कक्षा में कराया जाए। कितना लिखा जाए व कैसे, ये समझाया जाए।
– अपठित गद्यांश के प्रश्नोत्तर सीमित पंक्तियों में लिखना सिखाया जा सकता है।

bodhiyla.com

अंक योजना

Question 2

(a) परोपकार का अर्थ है निःस्वार्थ भाव से दूसरों का भला करना। परोपकार मानवता का सच्चा आदर्श है। परोपकार के लिए महर्षि दधीचि तथा गुरु तेग बहादुर ने अपने प्राणों का त्याग किया था।

(b) प्रकृति के अंग जलवायु, मिट्टी, वृक्ष, प्रकाश, पशु, पक्षी आदि सभी किसी न किसी रूप में हमें परोपकार की शिक्षा देते नज़र आते हैं। वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं, नदियाँ हमें पानी देती हैं, गाय से हमें अमृत जैसा दूध मिलता है । इसी प्रकार प्रकृति के बहुत से जीव जन्तु निःस्वार्थ भाव से परोपकार में लगे रहते हैं।

(c) परोपकारी मनुष्य अपने सुख दुख की परवाह नहीं करता वह दूसरों के भले के बारे में विचार करता है। वह लेने की नहीं देने की बात करता है। उसके जीवन का उद्देश्य खाना पीना मौज मस्ती करना नहीं होता, वह त्यागी जीवन जीता है। उसके हृदय में प्रभु का वास होता है। वह सभी मनुष्यों से प्रेम करता है। सारे संसार को अपना परिवार मानता है।

(d) परोपकार मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है । क्योंकि मन्दिरों में जाकर पूजा और अर्चना करना बेकार है यदि हमारे हृदय में त्याग और सेवा की भावना नहीं है । किसी की तकलीफ देखकर यदि हमें तकलीफ नहीं होती और उसकी मदद नहीं करते तो कभी धार्मिक नहीं हो सकते । नीतिकार सादी का कथन भी है अगर हम एक आदमी की तकलीफ दूर करते हैं तो उसका पुण्य उस 'हज' के बराबर होगा जिस पर जाते समय हमने रास्ते में सौ बार नमाज पढ़ी । इसीलिए कह सकते हैं कि दूसरे का भला करना ही संसार का उत्तम धर्म है।

(e) परोपकार के अनेक रूप हैं, यदि हम शरीर से शक्तिवान हैं तो हमें दूसरों द्वारा सताए गए दीन दुखियों की रक्षा करनी चाहिए । यदि हमारे पास धन अधिक है तो हम धन द्वारा अपने मुसीबत में फँसे भाई बहन की मदद कर सकते हैं । भूखों को भोजन कराना चाहिए । किसी को आश्रय चाहिए और आप आश्रय दे सकते हैं तो देना चााहिए । यदि आपके पास शारीरिक शक्ति या धन सम्पदा नही है तो मीठे बोल बोलकर भी दीन दुखियों को धीरज या तसल्ली दे सकते हैं । इतना ही नहीं भूले भटके को सही रास्ता दिखाना, मुसीबत के मारे व्यक्ति को अच्छी सलाह देना, रोगी की चिकित्सा करना ये सब परोपकार के अंग ही हैं । यहां तक कि दूसरों के प्रति शुभ विचार भी परोपकार का ही हिस्सा है।

bodhiyla.com

Question 3.

(a) Correct the following sentences :- [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :–

(i) तुम प्रातःकाल के समय उठकर क्या करते हो?

(ii) मेरी पढ़ाई में बहुत नुकसान हो रहा है।

(iii) वह विद्वान लड़की है।

(iv) हमने रात को खूब सोया।

(v) फूलों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।

(b) Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :- [5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए :–

(i) बाल बाँका न होना।

(ii) मैदान मारना।

(iii) हाथ तंग होना।

(iv) घर सिर पर उठाना।

(v) खाक में मिलना।

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

(a) (i) वाक्य शुद्धि में विभिन्न परिवर्तन किए गए जबकि कोई भ्रामक परिवर्तन नहीं था। 'के समय' को हटाना था, परन्तु इस वाक्य में परीक्षार्थी कशमकश में रहे।

(ii) इस वाक्य में परीक्षार्थियों ने परिवर्तन कहाँ होना है, नहीं पहचाना। वे 'में' के स्थान पर 'का' का परिवर्तन नहीं कर सके।

(iii) बहुत से छात्रों को ये नहीं पता था कि 'विद्वान' शब्द पुरूष हेतु आता है, लड़की के लिए 'विदुषी' लगता है।

(iv) 'हम' का परिवर्तन छात्र आसानी से कर सके।

(v) 'फूलों का सौन्दर्य' प्रयोग किया जाना है यह जानकारी कई छात्रों को थी ही नहीं। भाववाचक व विशेषण शब्द का ज्ञान नहीं था।

(b) मुहावरों को वाक्य में प्रयोग करना होता है, अर्थ को नहीं। यह गलती कुछ परीक्षार्थियों ने दोहरायी।

भाग (ii) मे अधिकतर छात्रों ने मुहावरे का सही प्रयोग किया पर 'मैदान मार ली', 'चोट पहुँचाना', 'क्षति पहुँचाना' आदि जैसे प्रयोग भी देखने को मिले।

भाग (iii) में बहुत से छात्र मुहावरे का सही प्रयोग न कर सके।

भाग (iv) में 'घर सिर पर उठाना' का विभिन्न रूप से प्रयोग किया गया। अर्थगत भिन्नता बहुत थी।

खाक में मिलना का अधिकतर छात्रों ने सही वाक्य प्रयोग किया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- अभ्यास से ही 'का, की, के' का प्रयोग सिखया जाना चाहिए।
- स्त्रीवाचक एवं पुरूषवाचक शब्दों का भेद बताया जाए जिसके आधार पर ये परिवर्तन परीक्षार्थी आसानी से कर सकेगें।
- विशेषण शब्दों का भी ज्ञान कराया जाए ताकि वाक्य की संरचना पहचानी जा सके।
- कर्ता एवं कर्म का अन्तर समझाया जाए।
- वाक्य किस तरह बनाए जाए इसका अभ्यास कक्षा में 'वाक्यरचना' में कराया जाए।

bodhiyla.com

अंक योजना

Question 3

(a) वाक्यशुद्धिकरण –

(i) तुम प्रातःकाल उठकर क्या करते हो?
तुम प्रातः उठकर क्या करते हो?
तुम प्रातः के समय उठकर क्या करते हो?

(ii) मेरी पढ़ाई का बहुत नुकसान हो रहा है।

(iii) वह विदुषी है।
वह विदुषी लडकी है।
वह विद्वान लडका है।

(iv) हम रात को खूब सोये।
मैं रात को खूब सोया।

(v) फूलों का सौन्दर्य देखते ही बनता है।
फूलों की सुन्दरता देखते ही बनती है।

(b) मुहावरे – मुहावरे का एक ही वाक्य में प्रयोग होना चाहिय (वाक्यांश होंने के कारण) । वाक्य में प्रयोग करने से मुहावरे का अर्थ स्पष्ट होना चाहिय ।

(i) यदि ईश्वर किसी की रक्षा करता है तो कोई उसका बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

(ii) हमारे स्कूल की फुटबॉल टीम ने मैच जीतकर मैदान मार लिया।

(iii) मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता, मेरा हाथ तो वैसे ही तंग है।

(iv) पैर में जरा सी चोट लग जाने पर आनन्द ने सारा घर सिर पर उठा लिया।

(v) भूकम्प ने कई घरों को खाक में मिला दिया।

SECTION B

काव्य – तरंग

Question 4.

'सच्ची मित्रता' शीर्षक चौपाइयों में तुलसीदास ने किस प्रकार सच्चे मित्र के गुणों पर प्रकाश डाला है? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'सच्ची मित्रता' में सच्चे मित्र के गुणों पर प्रकाश डाला गया। तुलसीदास द्वारा रचित चौपाइयों के आधार पर सच्चे मित्र के गुण न बताकर, कई परीक्षार्थियों ने साधारण रूप से सच्चे मित्र के गुण लिखे। बहुत कम छात्रों के द्वारा तुलसीदास के पद भाग लिखे गए।

उत्तर अपने विचारों में अधिक था कवि के विचार कम थे।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– कक्षा में पद–भाग समझाने के साथ–साथ लिखना भी सिखाया जाए।

– मात्राओं की गलतियों में सुधार कराया जाए।

अंक योजना

Question 4

राम भक्ति शाखा में राम के लौकिक रूप का विशद एवं सर्वांगीण वर्णन किया गया है। तुलसी के राम मर्यादा–पुरुषोत्त्म के रूप में स्मरण किये जाते हैं। तुलसीदास ने स्वयं को सेवक और ईश्वर को सेव्य माना है। 'रामचरितमानस' तुलसीदास की प्रतिष्ठा का आधार है। महाकाव्य के सभी गुणों से सम्पन्न यह काव्य अवधि भाषा में लिखा गया है। इसकी मुख्य शैली दोहा–चौपाई छंद है। इसमें राम को ब्रह्म के रूप में स्वीकार करके उनके अवतार को मर्यादित रूप में प्रकट किया गया है। लोक मर्यादा और जनहित ही इस महाकाव्य का उद्देश्य है ।

रामचरितमानस' के किष्किन्धाकांड से अवतरित इन चौपाइयों में तुलसीदास ने सच्चे मित्र के लक्षणों की ओर संकेत किया है।

निज दुख गिरी सम रज करि जाना।
मित्रक दुख रज मेरु समाना।।

जो व्यक्ति मित्र के दुख से दुःखी नहीं होता उसे देखने से पाप लगता है। सच्चा मित्र वह है जो अपने पर्वत के समान दुःख को धूल के समान तुच्छ समझे और मित्र के धूल के समान दुःख को भी बड़े पर्वत के समान समझे। मित्र अपना दुःख मित्र के साथ बाँटता है। वह उसके आगे अपने ह्रदय की गठरी खोल देता है। मित्र से ही सही परामर्श और सहानुभूति प्राप्त होती है। सच्चा मित्र भी बिना कह ।

रामचरितमानस' के प्रत्येक कांड में विभिन्न प्रसंग हैं। लोक हित की भावना से लिखे जाने के कारण प्रत्येक कांड में भक्ति, शील और मर्यादा का अद्भुत संगम है। स्वयं तुलसी ने कहा है कविता और वैभव वही श्रेष्ठ है जिससे गंगा के

bodhiyla.com

समान सबका कल्याण हो। इसी दृष्टिकोण से उन्होंने अपना साहित्य सबके लिए उपयोगी बनाया। एक अच्छा जीवन जीने के लिए इस महाकाव्य से सब अपने काम की बातें निकाल लेते हैं।

कुपथ निवारि सुपंथ चलावा ।
गुन प्रकटै अवगुनहि दुरावा ।।

मित्र के यूँ तो अनेक कर्त्तव्य होते हैं पर एक सच्चा मित्र अपने साथी को सदैव सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। वह यह नही देख सकता कि उसकी आँखों के सामने उसके मित्र का पतन हो और वह गलत रास्ते की ओर अग्रसर हो। एक श्रेष्ठ मित्र का कर्त्तव्य है कि वह अपने मित्र को बुरे मार्ग पर जाने से रोके तथा सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। अपने मित्र के दोषों के प्रति जागरूक रहे। उसकी बुराइयों को दूर करने का प्रयास करे तथा उसमें जो अच्छाइयाँ हैं उन्हें प्रकट करे ताकि मित्र का सम्मान बढ़े।

तुलसीदास का समस्त काव्य समन्वय का महाप्रयास है। सच्ची मित्रता में भी आदर्श और व्यवहार का समन्वय किया है। सच्चे मित्र को परिभाषित करते हुए वे बताते हैं कि जो व्यक्ति देने–लेने में मन में शंका न करे, अपने सामर्थ्य के अनुसार सदा अपने मित्र का हित करे वही सच्चा मित्र है। जब मनुष्य के ऊपर विपत्ति के काले बादल छा जाते हैं तो सच्चा मित्र ही आशा की किरण बनकर उसे सहारा देता है। समय आने पर वह मित्र को यथाशक्ति मदद करता है तथा लेने–देने में संकोच नहीं करता। निःस्वार्थ हित–चिन्तन सच्चा मित्र ही कर सकता है।

देत–लेत मन संक न धरई।
बल अनुमान सदा हित करई।

सच्चा मित्र विपत्ति में साथ नहीं छोड़ता, वह मित्र की परेशानी को अपनी परेशानी समझता है।

आज के मित्रों में स्वार्थ आ गया है। वे सामने तो कोमल और मीठे वचन कहते हैं परंतु मन मे कुटिलता रखते हैं।

आगे कह मृदु वचन बनाई।
पाछें अनहित मन कुटिलाई।।

झूठा मित्र आपके सामने मीठा बनता है व अच्छे शब्दों का प्रयोग करता है लेकिन उसके मन में दुर्भावना रहती है। वह ईर्ष्या और स्वार्थ के कारण मित्र का अहित ही करता है। वह यह दिखाने का प्रयास करता है कि वह उसका प्रशंसक है, सहयोगी है, परंतु जहाँ उसकी स्वार्थपूर्ति में कोई विघ्न दिखाई देता है तो वह किनारा कर जाता है अर्थात् साथ छोड़ देता है तथा काम भी बिगाड़ता है।

जाकर चित अहि गति सम भाई।
अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई।।

जिस मित्र का मन साँप की चाल के समान टेढ़ा हो, ऐसे कुमित्र को त्यागने मे ही भलाई है। ऐसे मित्र मीठा बोलते है और काम बिगाड़ते हैं। जब मित्र में सहानुभूति नहीं है और उसकी चाल साँप के समान तिरछी है तो वह सच्चे अर्थो में मित्र नहीं है। ऐसा मित्र 'विष रस भरा कनक घट जैसा' होता है। ऐसे मित्र का परित्याग कर देना चाहिए।

ृपन कुनारी।
कपटी मित्र सूल सम चारी।।
मूर्ख सेवक, कंजूस राजा, बुरी स्त्री और कपटी मित्र, ये चारों ही पीड़ा देने वाले होते हैं।

सच्चा मित्र अपने मित्र को बुरे मार्ग पर चलने से रोकता है, उसके गुणों को प्रकाशित करता है जिससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़े। वह अपने मित्र के अवगुणों को दूर करने का प्रयत्न करता है। विपत्ति के समय भी उसका साथ नहीं छोड़ता। अपने मित्र के दुःख को बड़ा समझ कर उसे दूर करने का प्रयास करता है। उसके साथ सहानुभूति और संवेदना रखता है। विद्वान इन्ही गुणों को सच्चे मित्र के लक्षण बताते हैं।

साधारण मनुष्य की दृष्टि में भी 'रामचरितमानस' की महत्ता इसलिए है कि उसमें पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय आदर्शों की स्थापना की गई है। मित्र का मित्र के प्रति क्या कर्त्तव्य है, यह श्री राम सुग्रीव को समझाते हुए कह रहे हैं। सुग्रीव ने राम को बालि की कथा सुनाई तो उसका भय दूर करते हुए श्री राम सुग्रीव को मित्र के कर्त्तव्य बता रहे हैं।

तुलसीदास रामभक्त एवं सामाजिक कवि हैं ।

bodhiyla.com

Question 5.

गुप्त जी ने 'विश्वराज्य' शीर्षक कविता में विश्व मानवता का संदेश दिया है। स्पष्ट कीजिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

छात्रों द्वारा 'विश्वराज्य' कविता का संक्षिप्त सार लिखा गया व विश्व मानवता का सन्देश भी बताया गया किन्तु कविता की पंक्तियों का उचित प्रयोग नहीं किया गया, जबकि भावों को स्पष्ट करने के लिये कविता की पंक्तियों को लिखना अति आवश्यक है।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- विश्व मानवता वास्तव में क्या है, इस ।
- छात्रों को समझाएं कि केवल मूलभाव या सारांश लिखने से अच्छे अंक प्राप्त नहीं होते।
- उत्तर में, कविता की पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप लिखने का अभ्यास करवाएं।

bodhiya.com

अंक योजना

Question 5

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि के रूप में जाने जाते हैं। उनके काव्य का स्वर राष्ट्र–प्रेम है। गुप्त जी भारतीय संस्कृति के अमर गायक हैं। गुप्त जी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना चरम सीमा तक पहुँच गई थी। यही कारण है कि उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया गया। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीय प्रेम, भारतीय संस्कृति का गौरवगान, विश्वबंधुत्व की भावना, गाँधीवाद, मानवता जैसी भावनाओं का समावेश है।

प्रस्तुत कविता 'विश्वराज्य' में कवि ने मानव को विश्वबन्धुत्व की भावना का संदेश दिया है। कवि सबको मिलजुलकर रहने को कहते हैं और परस्पर कटुता से बचने का एक ही मार्ग सुझाते है कि इसका एकमात्र रास्ता विश्वराज्य है। कवि मानव से कहते हैं कि जब भगवान ने एक ही धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्र, तारे, प्रकृति का निर्माण किया तो फिर मानव क्यों संसार को टुकड़ों–टुकड़ों में करता जा रहा है? यदि हम धरती के टुकड़े कर रहे हैं तो फिर हमें आकाश को भी टुकड़ों में बाँट देना चाहिए।

धरती को हम काटे छाँटे,
ते उस अम्बर को भी बाँटे,
एक अनल है, एक सलिल है, एक अनिल–संचार।
कहो, तुम्हारी मातृभूमि का है कितना विस्तार?

एक ही प्रकृति व एक ही पुरुष अर्थात ईश्वर है। ईश्वर की बनाई इस प्रकृति के अनेक रूप हैं। कवि मानव से प्रश्न कर रहे हैं कि जन्मदात्री जन्मभूमि भी एक ही होती है फिर इसका विस्तार, बोलो, कहाँ तक है? इस विशाल मातृभूमि के हर स्थान का अपना अलग गुण है। विभिन्न ऋतुएँ हर जगह अपना अलग प्रभाव दिखाती हैं। कहीं पर अधिक ठंड पड़ती है और कहीं पर भयंकर तपा देने वाली गर्मी। ऋतुओं का तो काम ही कंपाना और तपाना है। हमें ठंड हो चाहे गर्मी, हर मौसम में अपना एक स्वभाव रखना चाहिए। अपने भीतर कोई विकार पैदा नहीं होने देना चाहिए। अविकारी बने रहकर ही हम आपसी कटुता से बचे रह सकते हैं।

समशीतोष्ण एक रस हमको, होना है अविकार।

यद्यपि संसार के प्राणी अपने रूप रंग, आकृति में भिन्न–भिन्न हैं व देश भी अलग है, पर सबको एकजुट होकर रहना होगा। क्योंकि अलग–अलग रहकर तो कोई भी पूर्ण नही बन सकता। अतः हमें एकजुट होकर हिलमिलकर, एक

दूसरे का पूरक बनकर रहना होगा। तभी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारी पृथ्वी एक कुटुम्ब के समान है वाली सूक्ति चरितार्थ हो सकती है। कवि के शब्दों में :

अलग–अलग है सभी अधूरे,

सब मिलकर ही तो हम पूरे,

एक–दूसरे का पूरक है, एक मनुज परिवार ।

आज मानव धरती को टुकड़ों में बाँटता जा रहा है। आपसी भाईचारा समाप्त होता जा रहा है। कवि कहते हैं यदि स्वर्णभूमि तुम्हें अलग चाहिए, तुम ले लो, हम भी लोहे के अस्त्र–शस्त्रों से परिपूर्ण हैं। लेकिन इस भावना से तो अधिक तोड़–फोड़ की ही संभावना है। इस दूरी को हटाने या परस्पर वैमनस्य मिटाने का एक ही रास्ता बचा है और वह है 'विश्वराज्य'। वह विश्वराज्य जहाँ लोगों का शासन हो –– सब वर्ण, जाति और धर्म के लोग एकजुट होकर रहते हों तथा जहाँ सबको समान अधिकार प्राप्त हों। कवि ऐसे विश्वराज्य की कल्पना करते हुए मानव को यही संदेश देना चाहते हैं ––

परित्राण का एक मंत्र है,

विश्वराज्य, जो लोकतंत्र है,

सब वर्णो का, सब धर्मों का, जहाँ एक अधिकार,।

कवि गुप्त जी मानव को एकजुट होकर रहने का संदेश देते हैं। उनका मानना है कि जिस प्रकार एक ही शरीर के अनेक अंग होते हैं लेकिन सुख और दुख की अनुभूति में पूरा शरीर साथ देता है उसी प्रकार यह धरती भी एक है –– विभिन्न देश उसके विविध अंग है। एक दूसरे के सुख–दुख में सबको मिलजुलकर रहना चाहिए। यदि किसी देश पर कोई विपत्ति आती है अथवा कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो सब देशों का कर्त्तव्य बनता है कि वे उस देश की सहायता करें। उसके चोट पर मलहम का कार्य करें, धरती माता क्षमामयी, दयालु व त्यागमयी है। मानव को भी उस स्वभाव को अपनाना चाहिए। एक दूसरे के कष्ट को अपना कष्ट समझना चाहिए। साथ रहकर हम बड़े से बड़े संकटो का सामना कर सकते हैं। अतः यदि किसी पर भी कोई दुःख आए तो सबको उस पर स्नेह का लेप लगाना चााहिए। कवि कहते हैं ––

एक देह के विविध अंग हम,

दुख–सुख में सब एक संग हम,

लगे एक के क्षत पर सबका, स्नेह लेप सौ बार।

अतः आज मानव का कर्त्तव्य बनता है कि वे पृथकता की अर्थात् अलग–अलग होने की बात न करें। एक दूसरे के पूरक बनकर, मिलजुलकर रहने से ही आपसी वैमनस्य समाप्त होता है। जाति–पाति, धर्म, वर्ण आदि के भेद–भाव से ऊपर उठें व साम्प्रदायिक झगड़ों से बचें तभी एक सुन्दर विश्वराज्य की स्थापना हो सकती है। कवि सूर्य, चन्द्र, आकाश व धरती के माध्यम से बताना चाहते हैं कि ये सब एक ही हैं और सबको एक दृष्टि से अपना–अपना रस व गुण देते हैं। फिर मानव में भेदभाव क्यों? कवि विश्वमानवता का संदेश देते हुए विश्वराज का आह्वान करते हैं।

Question 6.

'सुमन के प्रति' किसकी रचना है? इसमें विकसित और मुरझाए फूल में क्या अन्तर दिखाया गया है? फूल के माध्यम से क्या भाव व्यक्त किया गया है? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

विकसित और मुरझाए पुष्प का अन्तर कुछ छात्र स्पष्ट न कर सके और फूल के माध्यम से भाव न लिखकर केवल सारांश लिख दिया। पद–भाग बहुत कम परीक्षार्थियों ने लिखे।

मत्राओं की त्रुटियाँ भी पाई गयीं।

कवि का नाम व कविता का नाम कहीं–कहीं नहीं लिखा गया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– कक्षा में अभ्यास कराया जाए कि कितना उत्तर लिखें व कैसे लिखें।
– उत्तर में पदभाग शामिल करने का निर्देश दें।
– छात्रों को बताऐं कि प्रश्न जिनते भागों में विभक्त करें।

अंक योजना

Question 6

'सुमन के प्रति' महादेवी वर्मा की एक प्रभावशाली रचना है। छायावाद और रहस्यवाद की ये अपने ढंग की अकेली कवयित्री थी। इन्हें आधुनिक काल की मीरा भी कहा जाता है। करुणा इनकी रचनाओं का मूलभाव है। इस रचना के माध्यम से कवयित्री ने मनुष्य को एक चेतना और सलाह दी है कि मनुष्य चाहे जिस स्थिति में हो, उसे समय के महत्त्व को हर समय समझकर कार्य करना चाहिए।

विकसित फूल की तुलना व्यक्ति की जवानी से की गई है। जब फूल कली के रूप में संसाररूपी उद्यान में प्रथम बार पदार्पण करता है तो सभी उसका स्वागत और अभिनंदन करते हैं ।

हास्य करता, खिलाती अंक में तुझको पवन,

कवयित्री कहती है कि फूल की सुन्दर कली को हवा भी अपनी गोद में खिलाती और बाहों का झूला झुलाती थी। कली के फूल बन जाने पर उसमें जब तक रूप, रंग और सुगंध थी तब तक भँवरे भी बड़े चाव के साथ उसके आस–पास मँडराते थे और अपनी मधुर ध्वनि से चारों ओर गुंजार करते थे, क्योंकि कली से फूल बन जाने पर उसके गुणों में वृद्धि हो गई थी। भँवरे उसका रस लेने के लिए आस–पास मँड़राते थे।

खिल गया जब पूर्ण तू , मंजुल सुकोमल पुष्पवर
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने लगे, आने भ्रमर।

माली उसकी प्रसन्नता के लिए और उसका पूरा ध्यान रखने के लिए एक दास के समान सेवा में उपस्थित हो जाता था। चन्द्रमा भी अपनी कोमल किरणों से उसकी सुन्दरता बढ़ाता। रात भी ओस की बूँदों के रूप में मोतियों की सम्पदा बिखेरती। भँवरे भी अपने मधुर गुंजार से लोरियाँ सुनाते और उसे बड़े प्यार से सुलाते । सभी उसे महत्त्व देते थे।

स्निग्ध किरणें चन्द्र की, तुझको हँसाती थी सदा ,
रात तुझ पर वारती थी, मोतियों की सम्पदा।
लोरियाँ गाकर मधुप, निद्रा विवश करते तुझे ,
यत्न माली कर रहा, आनंद से भरता तुझे। ''

फूल को इतना महत्त्व मिलने पर वह विकसित दशा को प्राप्त करता है। प्रकृति भी उसके स्वागत के लिए हर तरह से कोशिश करती है। विकसित होकर फूल अपने भाग्य पर इठलाता है।

समय किसी को नहीं छोड़ता। एक दिन पुष्प की जवानी भी समाप्त हो जाती है। उसकी सुगन्ध, सुन्दरता समाप्त हो जाती है तब स्वार्थी और अवसरवादी तत्व उसका साथ छोड़ जाते हैं। मुरझाया फूल वायु के झटके से अलग होकर जमीन पर गिर जाता है तथा उसकी पँखुडियाँ बिखर जाती हैं। फूल ने अपनी इस दशा के बारे में कभी कल्पना भी नहीं की थी। जिस पवन ने प्यार से उसे अपनी गोद में खिलाया था उसी पवन ने उसे तेज झोंके से जमीन पर गिरा दिया। अब तो भँवरा भी उसकी परछाई से दूर भागता है।

bodhiyla.com

आज तुझको देखकर चाहक भ्रमर आता नहीं ,
लाल अपना राग तुझ पर प्रात बरसाता नहीं।

अब कोई भी उसे अतीत में वापस नहीं ले जा सकता। कवयित्री ने खिले हुए फूल और मुरझाए फूल यानि पुष्प की दोनों ही अवस्थाएँ दिखाई हैं।

फूल पर की गई अन्योक्ति संसार के प्राणियों के स्वार्थपूर्ण जीवन की झाँकी हमारे सामने प्रस्तुत कर देती है। जब फूल कली के रूप में था तो वायु उसे गोद में लेकर खिलाती थी। सभी उसे देखकर प्रसन्न होते और उसका स्वागत करते थे। उसी प्रकार जब तक मनुष्य शिशु रूप में होता है और जब हँसता है तो सब उसे प्यार करते हैं। अपनी गोद में लेकर खुश होते हैं। गोद में लेकर उन्हें भी प्रसन्नता होती है। जब पुष्प का पूर्ण विकास हो जाता है तो भँवरे के रूप में स्वार्थी और अवसरवादी तत्व उसे घेर लेते हैं। इसी प्रकार जब मनुष्य यौवनावस्था में आ जाता है, उसके गुण और योग्यता में वृद्धि होने लगती है तो उसके मित्र, सगे सम्बन्धी उसके आस–पास मँडराने लगते हैं क्योंकि वे स्वार्थी और लालची होते हैं। उनकी तुलना कवयित्री ने फूल के आस–पास मँडराने वाले भँवरों से की है जिनका मुख्य उद्देश्य फूल का रस पीना होता है। अवसरवादी लोग भी अपना मतलब निकालने के लिए जवान लोगों के आस–पास घूमते हैं क्योंकि जवानी में मनुष्य समर्थ रहता है। सब उसे खुश करना अपना एकमात्र उद्देश्य मानते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा अपनी किरणों से, रात अपनी ओस की बूँदों से, भँवरे अपनी लोरियों से, माली अपनी कोशिश से फूल को प्रसन्नता देते हैं। पुष्प ने निस्वार्थ भाव से स्वार्थी और अवसरवादी भँवरों को उदारता से अपनी सुगंध और मधु का दान कर दिया, उसमें उसे सन्तोष की प्राप्ति हुई। जब तक उसका रूप, गंध, मधु पूरी तरह से नष्ट नहीं हो गए तब तक उसके पास भँवरे मँडराते रहे। उसने यह सोचा भी नहीं था कि वह एक दिन धूल–धूसरित हो जायेगा और उसे पूछने कोई नहीं आएगा।

कर दिया मधु और सौरभ, दान सारा एक दिन,
किन्तु रोता कौन है, तेरे लिए दानी सुमन?

इसी प्रकार मानव की स्वार्थपरता है। जब तक मनुष्य जवान तथा सम्पन्न रहता है, लोग, रिश्तेदार और परिवार वाले कई प्रकार की आशाएँ रखकर उससे प्यार करते हैं। उसे खुश रखने का प्रयास करते हैं क्योंकि उससे कुछ पाने की आशा रहती है। व्यक्ति के वृद्ध हो जाने पर वह अपनी उपयोगिता खो देता है। तब उसे कोई नहीं पूछता। न उसे प्यार मिलता है और न देखभाल और न ही उसकी सेवा होती है। सब उसकी उपेक्षा करते हैं। इसीलिए कहते हैं कि संसार में सब मतलबी हैं। आज का मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि अपना मतलब निकाल कर फिर किसी की परवाह नहीं करता।

मत व्यथित हो पुष्प, किसको सुख दिया संसार ने,
स्वार्थमय सबको बनाया है यहाँ करतार ने।

कवयित्री मुरझाए फूल से कहती है कि तू दुःखी मत हो कि तेरी दुर्दशा पर आँसू बहाने वाला कोई नहीं है। यह संसार का नियम है कि जब तक किसी वस्तु का महत्त्व होता है तभी तक उसे पूछा जाता है। कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो मतलब निकल जाने पर दूसरे की दुर्दशा पर दुःखी हो।

जब न तेरी दशा पर दुख हुआ संसार को,
कौन रोएगा सुमन, हमसे मनुज निस्सार को।

स्वार्थपूर्ति के बाद मानव अपने उपकारी को भूल जाता है। पुष्प के निःस्वार्थ त्याग तथा विश्व कल्याण के पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होकर कवयित्री ने इस कविता की रचना की है। अपना सर्वस्व अर्पित कर देना एक महान त्याग है। इस स्वार्थी संसार में इस त्याग को समझने वाला कोई नहीं है। आज संसार में स्वार्थ का बोलबाला है। कोई भी त्याग को महत्त्व नही देता। कवयित्री ने मुरझाए हुए फूल के रूप में ऐसे व्यक्ति की दुर्दशा का चित्रण किया है जो संसार के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देता है। जब उसकी दशा चिन्तनीय और दीन–हीन हो जाती है तो फिर उसे कोई नही पूछता और न ही कोई सहानुभूति दिखाता है। उसकी दशा पर कोई भी रोने वाला नही होता। कवयित्री ने भावपूर्ण शब्दों में पुष्प को लक्ष्य करके सांसारिक स्वार्थान्धता का चित्र उपस्थित किया है तथा मनुष्य को समय पर चेतने को कहा है। यौवनावस्था में हम अपनी वृद्धावस्था में होने वाली परेशानियों को ध्यान में नहीं लाते
दुःखी होते हैं पर कुछ कर नहीं पाते। उस समय मनुष्य की दशा धरती पर गिरे हुए मुरझाए पुष्प की तरह हो जाती है ।

bodhiyla.com

निर्मला

Question 7.

मुंशी तोताराम निर्मला की दृष्टि में दया के पात्र क्यों बन गए? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

इस प्रश्न में परीक्षार्थियों में भ्रामकता थी। वे निश्चय नहीं कर पा रहे थे क्या लिखे क्या न लिखें। कुछ ने पूरी कथा का सार लिख दिया, जबकि प्रश्न के अनुसार मुंशी तोता राम का स्वांग रचाना, परिवर्तन व झूठी बहादुरी के किस्सों ने ही निर्मला को सोचने पर मजबूर किया कि वह बेचारे हैं।

अस्पष्ट उत्तर ज्यादा मिले। धटनाक्रम बताने में भी भ्रम दिखाई दिया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- 'निर्मला' पढ़ाते समय चरित्रों की स्पष्ट पहचान बताऐं।
- छात्रों को महत्वपूर्ण पंक्तियाँ रेखांकित करवाऐं और पंक्तियों को उत्तर लिखते समय लिखने के लिए प्रेरित करें।

अंक योजना

Question 7

उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित प्रसिद्ध उपन्यास 'निर्मला' में अनमेल विवाह की समस्या को उठाया गया है। निर्मला की माँ कल्याणी पति की मृत्यु के पश्चात् दहेज न जुटा पाने के कारण निर्मला का विवाह एक अधिक उम्र के दुहाजू वर से कर देती है, जिसके कारण दोनों का ही जीवन नरक बन जाता है।

मुंशी तोताराम निर्मला के पिता की उम्र के थे अतः निर्मला ने उन्हें पति का दर्जा तो नहीं दिया, पिता समान सम्मान अवश्य दिया। मुंशी जी निर्मला का प्यार पाने के लिए कई उपाय कर चुके थे, वह उसे कभी उपहार लाकर देते तो कभी अच्छी–अच्छी खाने की वस्तुएँ, यहाँ तक कि एक दिन अपनी विधवा बहन की शिकायत सुनने पर उन्होंने बहिन को ही जली कटी सुना दी ताकि निर्मला पर अपने प्रेम का सिक्का जमा सकें। लेकिन उनकी आशाओं पर तुषारापात हो गया, क्योंकि अब निर्मला बच्चों पर अधिक ध्यान देने लगी।

मुंशी जी पहले तो निर्मला को सैर–सपाटे कराते, फिल्में दिखाते, पर कोई असर न होते देख वह खिन्न हो गए, उनका जी चाहता –– क्यों न इस वाटिका को उजाड़ दूँ?

मुंशी जी निर्मला की विरक्ति का कारण नहीं समझ पा रहे थे। सभी प्रकार के उपाय कर चुकने पर भी उनका मनोरथ पूरा न हुआ। एक दिन वह चिन्तामग्न थे तभी उनके सहपाठी मित्र नयनसुखराम आ गए और मुंशी जी को छेड़ने लगे कि आजकल तो खूब गहरी छनती होगी। मैं भी सोचता हूँ कि दूसरीशादी कर लूँ।

तोताराम ने उन्हें समझाया––"कहीं ऐसी हिमाकत न कर बैठना, नही तो पछताओगे।"

जब उन्होंने बताया कि, "मैं तो शादी करके पछता रहा हूँ, बुरी बला गले पड़ी!" तब नयनसुख राम उन्हें लड़कियों को वश में करने के हथकंडे सिखाने लगे। बोले ––

"अब मेरी एक सलाह मानों। ज़रा अपनी सूरत बनवा लो। आजकल यहाँ एक बिजली के डॉक्टर आए हुए हैं ..... न जाने क्या जादू कर देते हैं कि आदमी का चोला ही बदल जाता है।" यह सलाह मुंशी जी को पसन्द आई तो उन्होंने कहा –– तो फिर रंगीलेपन का स्वांग रचो। बालों में खिजाब लगाओ, रात को झूठ–मूठ का शोर करो –– 'चोर–चोर' और तलवार लेकर अकेले पिल पड़ो। आदि–आदि।

तोताराम ने उस समय तो ये बातें हँसी में उड़ा दी, लेकिन कुछ बातें उनके मन में बैठ गई। उन्होने धीरे–धीरे उन पर अमल करना शुरू कर दिया, जैसे –– बाल रंगना, सुरमा लगाना, आदि। उस दिन से वह अपनी जवाँमर्दी का कोई

bodhiyla.com

न कोई किस्सा भी अवश्य छेड़ देते। निर्मला को सन्देह होने लगा कि उन्हें कहीं उन्माद का रोग तो नहीं हो गया। निर्मला पर इस पागलपन का और क्या रंग जमता? उसे उन पर दया अवश्य आने लगी।

एक दिन रात को नौ बजे तोताराम सैर करके लौटे और निर्मला को अपनी बहादुरी का किस्सा सुनाने लगे कि मैंने अकेले तीन आदमियों का सामना किया, तीनों तलवार खींचकर मुझ पर झपटे तो मैंने छड़ी से ही उनको रोक लिया। निर्मला ने गम्भीर भाव से मुस्कराकर कहा ––

इस छड़ी पर तो तलवारों के बहुत निशान बने हुए होंगे?

मुंशी जी इस प्रश्न से सकपका गए। वह कुछ कहते कि इतने में रुक्मिणी देवी दौड़ती हुई आई और हाँफती हुई बोली –– तोता, तोता है कि नहीं? मेरे कमरे में एक साँप निकल आया है। .... फन निकाले फुफकार रहा है, जरा चलो तो। डण्डा लेते चलना ।

मुंशी तोताराम के चेहरे का रंग उड़ गया, मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगी, लेकिन मन का डर छिपाकर बोले –– साँप यहाँ कहाँ? तुम्हें धोखा हुआ होगा । कोई रस्सी होगी। रुक्मिणी ने जब कहा ''मर्द होकर डरते हो?'' तब मुंशी जी डरते–डरते बोले –– डरता नहीं हूँ, साँप ही तो है, शेर तो नहीं । यह कहकर लपके हुए बाहर चले गए। लेकिन उनका बेटा मंसाराम खाना छोड़कर हॉकी का डंडा हाथ में लेकर साँप पर ताबड़तोड़ वार करने लगा और साँप ढेर हो गया । मुंशी जी कई आदमियों को साथ लेकर आ रहे थे । रास्ते में मंसाराम को मरे हुए साँप को ले जाते हुए देखकर बोले –– ''मैं तो आ ही रहा था तुमने क्यों जल्दी की?''

वे निर्मला के पास जाकर बोले ––''मैं जब तक आऊँ, मंसाराम ने मार डाला ....। मैंने ऐसे–ऐसे कितने साँप मारे हैं। साँप को खिला–खिलाकर मारता हूँ। कितनों ही को मुट्ठी में पकड़कर मसल दिया है।''

रुक्मिणी ने कहा –– ''जाओ भी देख ली तुम्हारी मर्दानगी।''

मुंशीजी झेंप गए और बोले –– ''अच्छा जाओ मैं डरपोक ही सही ....जाकर महाराज से कहो, खाना निकाले।''

मुंशीजी भोजन करने गए तो निर्मला सोचने लगी कि कहीं इन्हें भीषण रोग तो नहीं हो गया, मैं इनकी सेवा कर सकती हूँ, अपना जीवन इन्हें अर्पण कर सकती हूँ पर अवस्था का भेद मिटाना मेरे वश में नहीं।

निर्मला को मुंशीजी पर दया आने लगी। मित्र नयनसुखराम द्वारा बताए गए हथकंडों का प्रयोग करके वह निर्मला का दिल तो न जीत सके, पर उसकी दया के पात्र अवश्य बन गए।

Question 8.

''यह स्नेह, वात्सल्य और विनय की देवी है या ईर्ष्या और अमंगल की मायाविनी मूर्ति?'' मंसाराम निर्मला के किस व्यवहार से सोच में पड़ गया और क्यों? कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [12½]

bodhiyla.com

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

यह प्रश्न दो भागों में बँटा हुआ था – मंसाराम निर्मला के किस व्यवहार से सोच में पड़ गया और क्यों? कुछ छात्रों ने उस समय की घटना को वर्णित किया है जब निर्मला अस्पताल में मंसाराम से मिलने और उसकी जान बचाने के लिए रक्त देती है।

कुछ छात्रों द्वारा घटनाक्रम के वर्णन के अलावा कथा का संक्षिप्त सार लिखा गया।

मात्रागत अशुद्धियाँ कहीं–कहीं दिखाई दीं।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- मात्राओं की शुद्धि सिखायी जाए।
- 'कथा प्रसंग' को वर्णन करके उसे पंक्ति खींच कर पहचान योग्य बनावें।
- समयानुसार उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाए।

अंक योजना

Question 8

हिन्दी साहित्य सम्राट, मूर्धन्य साहित्यकार, उपन्यास सम्राट आदि अनेकों उपाधियों से विभूषित मुंशी प्रेमचन्द के प्रसिद्ध उपन्यास 'निर्मला' में सामाजिक कुरीतियों, विसंगतियों एवम् दहेज समस्या को उठाया गया है।

बाबू उदयभानुलाल की बड़ी पुत्री निर्मला का विवाह भुवनमोहन सिन्हा से होना निश्चित हो गया था पर अचानक बाबू उदयभानुलाल की मृत्यु से सारी स्थितियाँ ही बदल गई। उनकी पत्नी कल्याणी अपने को असहाय स्थिति में पाती है। बेटी के विवाह हेतु दहेज जुटाने में अपने को असमर्थ देख वह उसका विवाह एक अधेड़ उम्र के विधुर से कर देती है जिसके तीन बेटे हैं, बड़ा बेटा मंसाराम निर्मला का ही हमउम्र है।

निर्मला इस अनमेल विवाह से प्रसन्न नहीं है वह इस नई परिस्थिति में स्वयं को ढाल नही पाती। पति उसके पिता की उम्र के थे अतः वह उनसे प्यार से बात न कर पाती, जिससे वे परेशान रहते और निर्मला को हर तरह से प्रसन्न रखने की कोशिश करते, लेकिन निर्मला पर कोई असर न होता।

मंसाराम निर्मला का हमउम्र था। निर्मला को मंसाराम के साथ हँसने बोलने में अपार सुख का अनुभव होता था। लेखक के शब्दों में ––

मंसाराम से हँसने–बोलने में उसकी विलासिनी कल्पना उत्तेजित भी होती थी और तृप्त भी।

एक दिन जब मुंशी तोताराम ने निर्मला को मंसाराम से स्नेहपूर्वक बात करते देखा तो उनके मन में शक ने जन्म ले लिया और उन्होने मंसा को बोर्डिंग भेजने का निर्णय ले लिया। पति के मन की दुर्भावनाएँ जानकर निर्मला ने सोचा कि अब वह मंसा से न पढ़ेगी, न बोलेगी, उसकी सूरत तक न देखेगी।

मुंशी तोताराम ने बेटे मंसा को निर्मला के विरुद्ध कर दिया। पिता से आशा के विरुद्ध बातें सुन मंसा का हृदय क्षोभ से भर गया, उसे दुःख हुआ कि निर्मला ने उसे आवारा कहा है। वह अपनी माँ को याद कर रोने लगा और महरी के दो बार बुलाने पर भी भोजन करने न गया। जब मिर्मला ने भूंगी के मुँह से सुना कि मंसा रो रहा है तो वह बेचैन हो गई और स्वयं को कोसने लगी कि मैं ही इस उपद्रव की जड़ हूँ।

निर्मला पति की इच्छा के विरुद्ध पुत्र मंसा को मनाने चल पड़ी और काँपते स्वर में बोली –– ''भोजन करने क्यों नहीं चल रहे हो?'' मंसा के बार–बार मना करने पर निर्मला बोली ––

''शाम को भी तो कुछ नहीं खाया था, भूख क्यों नहीं लगी?''

मंसाराम ने व्यंग्य से कहा –– बहुत भूख लगेगी तो आएगा कहाँ से?'' और द्वार बंद करने लगा। निर्मला ने मंसा का हाथ पकड़कर सजल नेत्रों से विनय से कहा ––

''मेरे कहने से चलकर थोड़ा सा खा लो। तुम न खाओगे, तो मैं भी जाकर सो रहूँगी .... क्या मुझे रात–भर भूखों मारना चाहते हो?''

मंसा सोच में पड़ गया, अभी भोजन नही किया, मेरे इन्तजार में बैठी है ––''यह स्नेह, वात्सल्य और विनय की देवी हैं या ईर्ष्या और अमंगल की मायाविनी मूर्ति?'' वह इस विनय को अस्वीकार न कर सका और बोला –– ''मेरे लिए आपको इतना कष्ट हुआ इसका मुझे खेद है ।.......''

लेकिन तभी मुंशी जी के खाँसने की आवाज आयी। निर्मला के चेहरे का रंग उड़ गया और कठोर स्वर में बोली –– ''मैं लौंडी नहीं हूँ कि इनती रात तक किसी के लिए रसोई के द्वार पर बैठी रहूँ। जिसे न खाना हो, वह पहले ही कह दिया करे।''

मुंशी जी ने मंसाराम से कहा –– ''खाना क्यों नहीं खा लेते जी? जानते हो क्या वक्त है,''

मंसाराम स्तम्भित खड़ा था, उसे यह रहस्य कुछ समझ में न आया। जहाँ पहले अमृत की वर्षा हो रही थी वहाँ अकस्मात् ईर्ष्या की ज्वाला कहाँ से आ गई?

निर्मला कुछ न बोल सकी। सोचने लगी कि यह क्या सोचता होगा कि पिताजी को देखते ही इसकी त्यौरियाँ क्यों बदल गई?

bodhiya.com

प्रातः भूंगी ने आकर बताया कि मंसाराम इक्के पर सामान लाद रहे हैं, अब स्कूल में ही रहेंगे। घर में जियाराम और सियाराम भी साथ जाने की जिद कर रहे थे। रुक्मिणी ने निर्मला से कहा –– ''तुम्हारा वज्र का हृदय है, महारानी! लड़के ने रात भी कुछ नही खाया ....।''

निर्मला ने कातर स्वर में कहा –– ''क्या करूँ दीदी जी? वह किसी की सुनते ही नहीं।'' वह आगे बोली ––

''मैंने उन्हें कुछ कहा हो तो मेरी जबान कट जाए। आपके हाथ जोड़ती हूँ, जरा जाकर उन्हें बुला लाइए। रुक्मिणी गुस्से से बोली –– ''तुम क्यों नहीं बुला लातीं? क्या छोटी हो जाओगी? ....''

निर्मला की दशा उस पंखहीन पक्षी की तरह हो रही थी जो सर्प को अपनी ओर आते देख उड़ना चाहता हो, पर उड़ नहीं सकता हो।

वह पति तोताराम के मन की दुर्भावनाओं की बात किसी को बता नहीं पाई। वैसे वह स्पष्टवादिनी थी पर घर में कलह न हो जाए और मंसाराम को पिता की असलियत पता चलेगी तो उस पर क्या बीतेगी, यही सोचकर वह अन्दर ही अन्दर तड़प कर रह गई। मंसाराम के जाने पर वह मूर्तिवत् व संज्ञाहीन खड़ी रह गई।

Question 9.

''ऐसे सौभाग्य से मैं वैधव्य को बुरा नही समझती। दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन साँप बन काटने दौड़े। उपवास कर लेना आसान है, विषैला भोजन करना उससे कहीं अधिक मुश्किल।'' इस कथन के आधार पर सुधा के किस स्वभाव का पता चलता है , स्पष्ट कीजिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'निर्मला' से पूछे गए इस प्रश्न में कुछ छात्रों को भ्रम था – उन्होंने सुधा के स्थान पर रूकमणि का चरित्र वर्णन किया।

कुछ छात्रों ने बस सुधा का चरित्र–चित्रण किया – उन्होंने उस घटना का वर्णन नहीं किया जिसके पश्चात सुधा ने ये कथन कहा था और अपनी चारित्रिक विशेषताओं एवं स्वभाव का परिचय दिया था।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- मात्रागत त्रुटियाँ सुधारी जाएँ। कथन के साथ–साथ चरित्र परिचय भी समाहित किया जाए।
- परीक्षा में किस प्रकार प्रश्न पत्र समयानुसार हल करें, ये समझाया जाए।

bodhiyla.com

अंक योजना

Question 9

सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास 'निर्मला' का एक प्रमुख पात्र डॉक्टर भुवन हैं जिनके एक गलत निर्णय के कारण निर्मला का पूरा जीवन ही लगभग नष्ट हो जाता है, साथ ही मुंशी तोताराम का परिवार भी बर्बाद हो जाता है। डॉक्टर भुवन ने अपने धनलोलुप पिता के कहने पर निर्मला से विवाह न कर एक धनी परिवार की बेटी सुधा से विवाह कर लिया। मंसाराम की बीमारी में डॉ भुवन ने इलाज किया था, जिसके कारण उनकी मुंशी जी से मित्रता थी। डॉक्टर साहब मुंशी जी को अपने साथ घुमाने ले जाते थे। दोनों परिवारों में एक दूसरे के घर आना–जाना शुरु हो गया था। दोनों ही इस बात से अनभिज्ञ थे कि डॉक्टर साहब वही व्यक्ति हैं जिन्होने निर्मला से विवाह करने में असमर्थता जाहिर की थी।

एक दिन सुधा निर्मला से मुंशी तोताराम से विवाह करने का कारण जानना चाहती है तब निर्मला सारी कहानी उसे बता देती है कि किस कारण उसे एक अधेड़ व दुहाजू व्यक्ति से विवाह करना पड़ा। सुधा यह जानकर हतप्रभ व दुःखी ा और कोई नहीं उसी का पति है। डॉक्टर साहब के घर आने पर वह उन्हें पुरानी बात याद दिलाती है और बुरा–भला कहती है। डॉक्टर साहब को आत्मग्लानि होती है। वह अपने इस अपराध का प्रायश्चित करने के लिए अपने छोटे भाई का विवाह बिना दहेज लिए निर्मला की छोटी बहन कृष्णा से करा

देते हैं। कृष्णा के विवाह के अवसर पर निर्मला को सारी बात पता चलती है कि डॉक्टर साहब ही वह व्यक्ति हैं जिनसे पहले उसका विवाह होने वाला था तथा उन्होंने ही अपने छोटे भाई का विवाह उसकी बहन से करवाया है।

निर्मला अकसर सुधा के घर अपना मन हल्का करने के लिए चली जाती है। सियाराम के घर छोड़कर चले जाने पर मुंशीजी उसकी खोज में घर से निकल पड़ते हैं और एक माह बीतने पर भी निर्मला को उनकी कुशल नहीं मिलती। उसे गृहस्थी चलाने की व बच्ची के भविष्य की चिन्ता सताने लगती है। उसे अब कुछ भी अच्छा नहीं लगता, अगर कुछ अच्छा लगता है तो सुधा से बातें करना।

एक दिन निर्मला का इतना जी ऊबा कि वह सवेरे ही सुधा के घर जा पहुँची। सुधा नदी में स्नाान करने गई थी, डॉक्टर साहब अस्पताल जाने की तैयारी कर रहे थे। निर्मला सीधे सुधा के कमरे में पहुँच गई और आराम से पलंग पर लेटकर एक किताब के चित्र देखने लगी। उसने सोचा सुधा कोई काम कर रही होगी, आ जाएगी। इसी बीच डॉक्टर साहब अपनी ऐनक ढूँढते हुए सुधा के कमरे में चले आए। वहाँ निर्मला को देखकर बोले ––क्षमा करना निर्मला, मुझे मालूम न था कि तुम यहाँ हो। वह ऐनक ढूँढने लगे। निर्मला ने सिरहाने से ऐनक की डिबिया दे दी। डॉक्टर साहब ऐनक लेकर वहीं खोए से खड़े रह गए। निर्मला ने एकान्त से भयभीत होकर पूछा –– सुधा कहाँ गई हैं? डॉक्टर साहब ने कहा ––हाँ, जरा स्नान करने चली गई हैं ..... आती ही होंगी। निर्मला जाने लगी तो डॉक्टर साहब ने अनुराग भरे स्वर में कहा –– ....अभी न जाओ। रोज सुधा की खातिर बैठती हो, आज मेरी खातिर से बैठो। बताओ, कब तक इस आग में जला करूँ, सत्य कहता हूँ निर्मला ......। निर्मला को लगा मानो पूरी पृथ्वी घूम रही है। वह बिना एक शब्द कहे वहाँ से चली गई। निर्मला ज्यों ही द्वार पर पहुँची उसने सुधा को ताँगे से उतरते देखा। सुधा उससे कुछ पूछती पर निर्मला तीर की तरह चली गई। सुधा विस्मय में खड़ी रह गई। उसने भीतर आकर देखा –– डॉक्टर साहब मुँह लटकाये खड़े हैं। सुधा ने निर्मला के अचानक बिना बात किए चले जाने का कारण पूछा पर डॉक्टर साहब बहाने बनाकर टालते रहे। बोले –– ''मैंने तो कहा था बैठिए वह आती ही होंगी, न बैठी तो मैं क्या करता?'' सुधा को बात कुछ जँची नहीं, वह बोली –– ''मैं जरा उसके पास जाती हूँ, देखूँ क्या बात है?''

सुधा जल्दी से निर्मला के घर पहुँची तो उसने देखा कि निर्मला चारपाई पर पड़ी रो रही थी। सुधा ने निर्मला से रोने का कारण पूछा –– कहा, ''बहिन, सच बताओ, क्या बात है? मेरे यहाँ किसी ने तुम्हें कुछ कहा है?'' सुधा के बहुत जोर देने पर निर्मला ने कहा –– ''मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ, मत पूछो। तुम्हें सुनकर दुःख होगा.....। सुधा इन शब्दों के पीछे जो संकेत था उसे समझ गई कि डॉक्टर साहब ने जरूर कुछ छेड़छाड़ की है। वह सिंहनी की भाँति क्रोध से काँपती हुए चली गई। घर जाकर उसने डॉक्टर साहब के असली चेहरे का पर्दाफाश किया तो मारे ग्लानि के उन्होंने आत्महत्या कर ली।

निर्मला को जब इस बात का पता चला तो वह सुधा के पास पहुँची और बोली –– ''यह क्या हो गया बहिन, तुमने क्या कह दिया,'' सुधा बोली –– ''चुप तो न रह सकती थी, बहिन, क्रोध की बात पर क्रोध आता ही है।''

निर्मला ने कहा कि मैंने तो तुमसे कोई ऐसी बात भी न कही थी। सुधा बोली कि तुम कैसे कह सकतीं थी पर उन्होंने जो बात हुई थी, वह कह दी। उस पर मेरे मन में जो आया मैंने कह दिया। जब एक बात दिल में आ गई तो उसे पूरा हुआ ही समझना चाहिए। फिर एकांत में ऐसा शब्द जबान पर लाना ही कह देता है कि नीयत बुरी थी। मैंने तुमसे कभी नहीं कहा, लेकिन मैंने उन्हें कई बार तुम्हारी ओर झाँकते देखा था। उस वक्त मैंने यही समझा था कि मेरी आँखों को धोखा हो रहा है, पर अब मालूम हुआ उस ताकझाँक का मतलब क्या था। पहले यह जानती तो तुम्हें अपने घर न आने देती। कम से कम तुम पर तो उनकी निगाह न पडने देती। ''ईश्वर को जो मंजूर था, वह हुआ। ऐसे सौभग्य से मैं वैधव्य को बुरा नहीं मानती। दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन साँप बनकर काटने दौड़े। उपवास कर लेना आसान है, विषैला भोजन करना उससे कहीं मुश्किल।'' इस कथन से स्पष्ट है कि सुधा एक

ामानी स्त्री थी। एक चरित्रहीन पति की पत्नी होने से तो वह वैधव्य जीवन जीना उचित समझती है। वह डॉक्टर साहब की आत्महत्या के लिए निर्मला को दोषी नही ठहराती। अपितु निर्मला स्वयं को अपराधिनी मानती है तो वह उस पर दोषारोपण नहीं करती बल्कि उसे प्यार से समझाती है और उससे पहले की तरह मैत्री रखती है।

bodhiyla.com

कथा सुरभि

Question 10.

''सन्यास का अर्थ गृहस्थ जीवन से पलायन नहीं वरन् उसका पालन करना है।'' कहानी का सार लिखते हुए उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

कथा का सार लिखते समय अनावश्यक विस्तार दिया गया।

मात्रागत अशुद्धियाँ कहीं–कहीं दिखाई दीं।

कुछ छात्रों ने सार लिखकर उत्तर समाप्त कर दिया, उद्धेश्य लिखा ही नहीं, अथवा बहुत संक्षेप में लिखा।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- परीक्षार्थियों को निर्देश दें कि प्रश्न की भाषा ध्यान से पढ़ें एवं प्रश्न की मांग के अनुसार उत्तर लिखें।
- मात्रागत व भाषागत सुधार का अभ्यास कक्षा में ही सम्भव है। इसे अवश्य कराया जाए।

अंक योजना

Question 10

'सन्यासी' कहानी के लेखक सुदर्शन जी की कहानियों में आदर्शवाद प्रायः देखने को मिलता है। प्रस्तुत कहानी 'सन्यासी' में पालू के चरित्र द्वारा इस तथ्य को सिद्ध किया गया है कि गृहस्थ के उत्तरदायित्व पूर्ण किए बिना जो व्यक्ति संन्यास जैसे पवित्र आश्रम में प्रवेश करता है, वह सच्ची शांति कदाचित प्राप्त नहीं कर सकता। उसका मन भटकता रहता है। लेखक ने इस कहानी द्वारा सेवा–मार्ग को जंगलों की खाक छानने से कहीं उत्तम बताया है। कहानी की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें समस्या और समाधन दोनों का समावेश है।

पालू लखनवाल, गुजरात का रहने वाला था। उसके दो बड़े भाई थे। वह अपना–अपना कार्य करते थे। उनका विवाह हो चुका था। पालू मस्त तबियत का व्यक्ति था। उसे बाँसुरी और घड़ा बजाने का शौक था। गाँव के लोग उसकी कला पर मुग्ध थे। उनका कोई भी त्योहार पालू के बिना सूना था। लेकिन पालू के निखट्टू होने के कारण उसे घर में कोई पंसद नहीं करता था। माँ रूखी–सूखी रोटी दे देती तो भाभियाँ व्यंग्यबाण कसती। कसरती जवान पालू पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसके शरीर और स्वास्थ्य को देखकर एक चौधरी ने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी। पालू के जीवन में परिवर्तन आ गया। वह हर समय अपनी पत्नी के पास बैठा रहता। अपनी रुचियों से भी उसको विरक्ति हो गई थी। गाँव के लोग इस बात का उलाहना भी देते ––

''यार! कैसे जोरूदास हो, कभी बाहर ही नहीं निकलते।'' पालू पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ। माँ कहती ––

''ब्याह सबके होते आए हैं, परन्तु तेरे सरीखा निर्लज्ज किसी को नहीं देखा कि दिन–रात स्त्री के पास ही बैठा रहे।''

कुछ समय बाद उनका पुत्र भी हो जाता है। पुत्र छोटा ही था कि पत्नी का देहान्त हो जाता है और तीन माह के बाद उसके माता–पिता का भी। पालू को इन घटनाओं से आघात लगा। पत्नी की मृत्यु उसकी संसार से विरक्ति का कारण बनी।

''मुझे न धन चाहिए, न जायदाद। मैं सांसारिक बन्धनों से मुक्त होना चाहता हूँ। अब मैं संन्यासी बनूँगा।''

यह कहकर उसने अपने पुत्र सुखदयाल को पकड़कर भाभी की गोद में डाल दिया और रोते हुए बोला ––

bodhiyla.com

"इसकी माँ मर चुकी है; पिता संन्यासी हो रहा है परमात्मा के लिए इसका दिल न दुखाना।

वह शांति प्राप्त करने हिमालय पर्वत पर चला गया। पर्वत पर रहता, पत्थरों पर सोता। प्रतिक्षण ईश्वर भक्ति में मगन रहता। विलासी पालू आत्मसंयमी विद्यानन्द स्वामी बन गया। समय के घटनाक्रमों ने उसके सारे विकार दूर कर दिए और उसके अन्दर छिपे उत्तम गुणों को प्रकाशित कर दिया। आत्म–नियंत्रण के कारण उसके मुख–मंडल पर तेज बरसता था। स्वामी विद्यानन्द के नाम से वह इतना प्रसिद्ध हो गया था कि यात्री लोग जब तक उसके दर्शन न कर लेते, अपनी यात्रा को पूर्ण न समझते थे। उनकी कुटिया में रुपए–पैसे और खाद्य पदार्थो के ढेर लगे रहते थे । स्वामी जी त्याग की चरम–सीमा तक पहुँच गए थे । इतना होते हुए भी उनके मन को शांति नहीं थी । वे सोचते ––

"देश–देशान्तर में मेरी भक्ति की धूम मच रही है, दूर–दूर मेरे डंके बज रहे हैं, मेरे मन को शांति क्यों नहीं? सोता हूँ तो सुख की निद्रा नहीं आती, जागता हूँ तो पूजा–पाठ में मन एकाग्र नहीं होता।"

वह संन्यासी तो बन गया था। यश भी उसने कमा लिया था। परन्तु शांति नहीं मिल रही थी। उसके मन में आवाज़ आती ––

"तू अपने आदर्श से दूर जा रहा है।"

वह घबरा कर रोने लगता। मन तो हल्का हो जाता परन्तु चित्त को शांति फिर भी नही मिलती। वह सोचता ––

"संसार मुझे धर्मावतार समझ रहा है, पर कौन जानता है यहाँ आठों पहर आग सुलग रही है।"

इस अशांति की अवस्था में उसका अचेतन मन उसे कर्त्तव्य पालन के लिए पुकारता रहता था। पालू संन्यासी तो बन गया परन्तु पुत्र के प्रति उसने अपने कर्त्तव्य का पालन नही किया। वह अपने गुरु प्रकाशानंद की शरण में जाकर बोला ––

"मैं प्रतिक्षण अशांत रहता हूँ, मानों कोई कर्त्तव्य है, जिसे मैं पूरा नहीं कर रहा हूँ।"

प्रकाशानन्द जी ने उससे वार्तालाप करके पता किया कि उसके माता–पिता संसार में नहीं हैं, पत्नी की मृत्यु हो गई। दो वर्ष के बालक को छोड़कर वह शांति की खोज में निकला है। प्रकाशानन्द जी ने उसकी समस्या जानकर अगले दिन ही उससे गाँव जाने के लिए कहा।

लेखक ने यह भी बताया है कि कर्त्तव्य–परायणता का बोध होते ही मनुष्य के मन की अशान्ति दूर हो जाती है। जब पालू गाँव में आकर अपने पुत्र की दयनीय दशा देखता है तो उसका हृदय द्रवित हो उठता है। उसकी आँखे खुल जाती हैं। उसे अपनी भूल का एहसास हो जाता है और अशांति का कारण पता चल जाता है। पुत्र की दुर्दशा देखकर वह सोचता है ––

"इस अनर्थ का उत्तरदायित्व मेरे सिर है, जो इसे यहाँ छोड़ गया।"

उसकी आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगते हैं।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने पाठकों को कर्त्तव्य–परायणता की श्रेणियों से भी अवगत कराया है। लेखक ने पारिवारिक जीवन, सामाजिक जीवन और आध्यात्मिक जीवन की समस्याओं और समाधानों की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया है। तीनों प्रकार के जीवन की अपनी ही सीमाएँ हैं। जहाँ वे एक दूसरे से जुड़े हैं वहाँ एक दूसरे से अलग भी हैं। मनुष्य जिस समाज में रहता है उसके प्रति उदासीन होकर जीवन बिताना असम्भव है। इसी प्रकार व्यक्ति आध्यात्मिकता द्वारा मानसिक शांति और उत्कर्ष को प्राप्त कर सकता है। परन्तु पारिवारिक कर्त्तव्यों और दायित्वों को पूरा किए बिना वह न तो समाज में जी सकता है और न ही मन की शांति प्राप्त कर सकता है। उसका चित्त अशांत रहता है।

लेखक ने पारिवारिक कर्त्तव्यपरायणता को महत्त्व दिया है। स्वामी विद्यानंद जब अपने पुत्र के साथ सुख–निद्रा में डूबे हुए थे तब स्वप्न में देवी ने कहा ––

"शांति के लिए सेवा–मार्ग की आवश्यकता है। पर्वत छोड़ और नगर में जा। वहाँ दुःखी जन रहते हैं। किसी के घाव पर फाहा रख, किसी के टूटे हुए मन को धीरज बँधा परन्तु यह रास्ता भी तेरे लिए ठीक नहीं है। तेरा पुत्र है, तू उसकी सेवा कर। तेरे मन को शांति प्राप्त होगी।

यह सुनते ही स्वामी जी की आँखो से पर्दा हट गया। इस प्रकार लेखक ने इस कहानी के माध्यम से संदेश दिया है कि कोई भी गृहस्थ व्यक्ति अपने परिवार के उत्तरदायित्व को पूरा किए बिना संन्यासी बनकर शांति, सन्तोष और मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता।

Question 11.

'भाग्य रेखा'कहानी में यजमान मजदूर–वर्ग का व्यक्ति है, जो क्रान्ति में विश्वास रखता है। कथानक के आधार पर स्पट कीजिए। [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'कथानक' कहानी कला के तत्वों में से एक प्रमुख अंग है। परीक्षार्थियों को 'कथानक' की जानकारी नहीं थी। केवल कहानी का संक्षिप्त सार लिखा गया।

परीक्षार्थियों ने स्पष्ट नहीं किया कि यजमान भी मजदूर वर्ग का प्रतिनिधि है, जो क्रान्ति में विश्वास रखता है।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– कहानी कला के तत्वों की जानकारी कक्षा में दी जाए। शीर्षक की सार्थकता व कथानक का विभेद समझाया जाए।
– कहानी के सन्देश को प्रसारित करते हुए

अंक योजना

Question 11

भीष्म साहनी की कहानियों में वर्तमान जीवन की विसँगतियों पर तीखा व्यंग्य मिलता है। 'भाग्य रेखा' कहानी में भी इन्होने यह स्पष्ट किया है कि मालिक और मजदूरों में गहरी खाई होती है। समाज में इन दो वर्गो में आर्थिक विषमता है। यजमान मजदूर भी अपने मालिक के अन्याय का शिकार बनता है।

कनाट–सरकस के बाग में तीन साल से बेरोजगार एक मजदूर अपना समय बिताने के लिए आ बैठता है। वह खाकी से कपड़े पहने, अपने जूतों को सिरहाना बनाए घास पर लेटा लगातार खाँस रहा था। चालीस–पैंतालीस वर्ष का, कुरूप, सफेद छोटे–छोटे बाल, झाँइयाँ भरा चेहरा, लम्बे–लम्बे दाँत और कन्धे आगे को झुके हुए। वह दमे का मरीज था। खाँसता जाता और घास पर थूकता जाता। उसका अति साधारण व्यक्तित्व उसकी मजबूरी और बेबसी को बता रहा था।

लेखक ने उसके इस तरह थूकने पर आपत्ति प्रकट की और कहा,

"सुना है विलायत में सरकार ने जगह–जगह पीकदान लगा रखे हैं, ताकि लोगों को घास–पौधों पर न थूकना पड़े।"

यह सूनते ही व्यंग्य भरी मुस्कुराहट से वह मजदूर बोला,

"तो साहब वहाँ के लोगों को ऐसी खाँसी भी न आती होगी। ..... बड़ी नामुराद बीमारी है, इसमें आदमी घुलता रहता है, मरता नहीं।"

इस तरह मजदूर अपनी बीमारी को झेलते हुए भी मुस्कराते हैं। उन्हें जीवन में मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हो पाती। समाज उनके कठोर श्रम के बदले उन्हें क्या देता है? शायद दो समय की रूखी–सूखी रोटी भी नहीं मिल पाती। न तो उनका कोई दुःख सुनने वाला है, न सहानुभूती रखने वाला। लेखक ने उसके बारे मे जानने की कोशिश की तो पता चला कि वह कालका वर्कशाप में काम करता था। मशीन से उसके दाएँ हाथ की तीन उँगलियाँ कट गई थी। मालिक ने उसे काम से निकाल दिया क्योंकि अब वह काम करने में उतना समर्थ नहीं रहा। वर्कशाप में मशीनों से इस तरह की दुर्घटनाएँ होती रहती हैं जो आदमी को अपंग और बेरोज़गार कर देती हैं। ये मजदूर प्राणों को जोखिम में डालकर अपने परिवार का पालन–पोषण करने के लिए निरन्तर संघर्ष करते हैं। दुर्घटना के बाद मालिक बेकार समझ उन्हें निकाल देता है। एक की जगह खाली होने पर कई उस जगह के लिए टूट पड़तें हैं मालिक उनकी समस्याओं से अनभिज्ञ होकर उनका शोषण करते हैं।

दमे का रोगी भी अपनी किस्मत जानने के लिए एक ज्योतिषी के सामने हाथ फैला देता है। जब वह धन मिलने की बात अपने यजमान से कहता है तो यजमान को लगता है कि वह उसकी गरीबी, बेकारी और मजबूरी का उपहास उड़ा रहा है। वह उसे चाँटा कस देता है। मजदूरों की भाग्य–रेखा कर्म में ही है। जब ज्योतिषी ने कहा, शायद तुम्हारी पत्नी के

bodhiyla.com

भाग्य से धन मिले। पर पत्नी तो बच्चों को छोड़कर जा चुकी थी। ज्योतिषी भी पूर्वी बंगाल से आया एक शरणार्थी था। वह बाग में बैठ कर बेरोजगार जैसे व्यक्तियों के हाथ देखकर कुछ पैसे कमा लेता था। मई दिवस के उपलक्ष्य में बाग में मजदूरों की टोलियाँ जमा होने लगी। ज्योतिषी ने भीड़ को बढ़ते देख यजमान से उसका कारण जानना चाहा। उसने कहा,

"तुम नहीं जानते? आज मई दिवस है, मजदूरों का दिन है। .....आज के दिन मजदूरों पर गोली चली थी।"

मजदूरों के जुलूस अलग–अलग दिशाओं से बढ़ते, नारे लगाते बाग की ओर बढ़ रहे थे। साथ ही तमाशबीन भी बढ़ रहे थे। कई जुलूस मिल कर एक हो गए। बड़े जोश से नारे लगा रहे थे। जुलूस वहाँ से आगे बड़ गया। दर्शक भी छँटने लगे थे। एक मजदूर किस्म का आदमी भागता हुआ आया तो यजमान ने उसे रोकते हुए पूछा,

"यह जुलूस कहाँ जाएगा?"

वह व्यक्ति बोला,

"....अजमेरी गेट, दिल्ली दरवाजा होता हुआ लाल किले तक जाएगा, वहाँ जलसा होगा।"

यजमान ने कहा ,

"वहाँ तक पहुँचेगा भी। यह लट्ठधारी जो साथ जा रहे है, जो रास्ते में गड़बड़ हो गई तो,"

वह व्यक्ति बोला ?

"अरे गड़बड़ तो होती ही रहती हैं, तो जुलूस रुकेगा थोड़े ही।"

दमे का मरीज उस जुलूस का हिस्सा नहीं था पर जुलूस निकालने वालों के वर्ग का ही आदमी था। उसने मजदूरों के संगठन की शक्ति को आँका। वह समझ गया कि मजदूर संख्या में अधिक होते हुए भी मालिकों के शोषण का शिकार बनते हैं। मजदूरों की मेहनत से ही अमीर और अमीर होते जाते हैं। अमीरों को मजदूरों की पीड़ा से कोई सरोकार नहीं है। किसी को उनके कर्म और महत्त्व का पता नहीं है। अगर मजदूर अपने प्रति किए गये अन्याय के प्रति सामूहिक रूप से आवाज उठाएँ, क्रान्ति करें तो मालिकों के शोषण से बचा जा सकता है।

दमे के मरीज की आँखों में आशा की झलक आ गई। यही आशान्वित दृष्टिकोण भाग्य–रेखा का निर्माण करता है। उसने अपनी उँगलियाँ कटी हथेली ज्योतिषी के सामने खोल दी।

"फिर देख हथेली, तू कैसे कहता है कि भाग्य–रेखा कमजोर है?"

इस प्रकार यजमान को एक आशा बँधी। शायद उसका भाग्य भी साथ दे और फिर से जीविका का साधन मिले।

Question 12.

"कामकाज कहानी में तीन कहानियाँ होने के बाद भी उनमें कथानक–ऐक्य है।" कैसे? स्पट कीजिए। 12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'कामकाज' कहानी में परीक्षार्थियों ने तीनों कहानियों को संक्षिप्ता रूप से प्रस्तुत किया, किन्तु 'कथानक ऐक्य' कैसे है, यह बहुत कम लिखा गया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

- प्रत्येक कहानी का सन्देश समझाया जाए व समयानुसार लिखने की प्रेरणा दी जाए।
- मात्रागत सुधार कक्षा में ही कराया जाना चाहिये।

bodhiyla.com

अंक योजना

Question 12

श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानी 'कामकाज' तीन लघु कहानियों का संग्रह है। इसमें कहानियाँ और पात्र भिन्न–भिन्न होते हुए भी उनका भाव एक ही है। यूँ कह सकते है कि कहानियों का कलेवर अलग–अलग होते हुए भी आत्मा एक है। तीनों कहानियों में महानगरीय जीवन–शैली को दिखाया गया है। वहाँ की जिन्दगी में व्यस्तता इतनी अधिक है कि संवेदना, करुणा, दया, माया, जैसे भाव कामकाज के नीचे दबकर रह गए हैं।

सर्वप्रथम हम लाला कस्तूरीमल की व्यस्तता के दर्शन करते हैं। लाला जी का अपना व्यवसाय है। वस्त्रों की दुकान है। एक सज्जन क्वेटा से आते हैं तो उन्हें पता चलता है कि क्वेटा में भूकम्प आया था। लाला जी के सम्बन्धी क्वेटा में रहते हैं। इस कारण वह उनमें दिलचस्पी लेने लगते है। और उनसे भूकंप की जानकारी लेते हैं। वह सज्जन, मधुसूदन, जो लाला जी का बहनोई है, के विषय में बताते हैं ––

''मुझे आपके साथ हार्दिक सहानुभूति है। श्री मधुसूदन अब इस दुनिया में नहीं रहे।''

लेकिन लाला जी को उन सज्जन की बात पर जैसे विश्वास ही नहीं होता। वह पूछते हैं ––

''भूकम्प के बाद आप उनके यहाँ गए थे?''

वह सज्जन बताते हैं ––

''उनके छोटे भाई साहब की जबानी मालूम हुआ। आप बिना किनारे की भी कुछ धोतियाँ दिखाइएगा।''

लालाजी अपने आदमी को आवाज़ देकर धोतियाँ लाने को कहते हैं, साथ ही पूछते हैं ––

''उनके भाई साहब ने? क्या उन्होने मि0 मधुसूदन का अन्तिम–संस्कार किया था?'' उन्हें यह भी पता चलता है कि मधुसूदन की पत्नी उर्मिला अस्पताल में है। उन्हें अपनी बहन उर्मिला को क्वेटा से लाने का प्रबन्ध करना है। लाला जी उर्मिला की बात को अधिक महत्त्व न देते हुए कपड़ा दिखाने लगते हैं, वह कहते हैं ––

''हम खुद जहाँ तक बन पड़ता है, स्वदेशी माल ही बेचते हैं ... आपने खुद उर्मिला को अस्पताल में देखा था?''

इस प्रकार लाला जी काम की व्यस्तता में उर्मिला की बात को बात बनाकर ही छोड़ देते हैं। वह क्वेटा से आए सज्जन से कपड़ों का मोलभाव कर ही रहे थे कि एक सम्भ्रान्त महिला उनकी दुकान में आती है। लाला जी इन सज्जन के पास अपना आदमी छोड़कर उस महिला की ओर बढ़ जाते हैं।

लेखक बताते हैं कि लाला जी के चेहरे पर उदासी थी, पर वह उस उदासी का प्रभाव काम पर नहीं पड़ने देते ।

दूसरी कथा रावलपिंडी जेल में काम कर रहे एक चौकीदार की है। चौकीदार यूसुफ़ रावलपिंडी जेल का एक मेहनती और वफ़ादार कर्मचारी है। उसका नौकरी का रिकार्ड इतना अच्छा है कि पन्द्रह वर्षों की नौकरी में उसने कोई छुट्टी नहीं ली। एक दिन उसके पास एक तार आता है जिसमें उसके श्वसुर की बिमारी का उल्लेख है, यूसुफ अपने श्वसुर के तानों से परेशान होकर अपने देश से भाग आया था। पिछले पन्द्रह वर्षो से वह अपने श्वसुर को बराबर दस रुपए प्रतिमास भेज रहा है। लेकिन वह अपने श्वसुर और पत्नी से मिलने न जा सका।

तार पाकर यूसुफ़ विचलित हो जाता है। उसे अपनी मातृभूमि की याद आती है। वह जेलर से छुट्टी की दरखास्त करता है पर जेलर मना कर देता है। बाद में क्लर्क द्वारा सरकारी नियम समझाए जाने पर जेलर को छुट्टी के लिए हामी भरनी पड़ती है। क्लर्क जेलर से कहता है ––''वह छुट्टी लेना चाहता है। उसकी पूरी छुट्टी बाकी है। कानूनन हम लोग उसे छुट्टी न लेने के लिए मज़बूर नहीं कर सकते।''

सरकारी नियम के कारण जेलर छुट्टी तो दे देता है लेकिन अपने काम के कारण दो दिन बाद जाने की अनुमति देता है। कहता है ––

यार, तुम्हें मेरी सेबों की पेटी पेशावर तक अपने साथ ले जानी होगी और वह पेटी परसों से पहले यहाँ नहीं पहुँच सकती।

इस कहानी में भी कामकाज या नौकरी ही भावनाओं पर रुकावट बन जाती है। यूसुफ़ न चाहते हुए भी अपने बॉस को इन्कार नहीं कर पाता।

bodhiyla.com

तीसरी कहानी बैंक में काम करने वाले एक कर्मचारी देसराज की है जिसकी जेब में पाँच सौ के नोट पड़े हैं। बैंक में जाकर उसे अपने मालिक की रेलवे रसीद छुड़ानी है। वह रास्ते में एक बेहोश व्यक्ति को पड़ा देखता है जो बेहोशी की दशा में भी 'पानी–पानी' पुकार रहा है। लोगों की भीड़ है लेकिन आस–पास पानी कहीं नहीं है। सब देसराज से साइकिल पर जाकर पानी लाने का आग्रह करते हैं। देसराज के हृदय में दया का संचार होता है। वह पानी लाने के लिए मन में सोचता है, पर तभी उसकी नजर हाथ की घड़ी पर पड़ती है। वह कहता है ––

''बारह बजकर पैंतालीस मिनट हो चुके हैं। पन्द्रह मिनटों के बाद बैंक में न तो रुपये ही जमा कराये जा सकेंगे और न ही रेलवे रसीद ही ली जा सकेगी।''

देसराज अपने हृदय की भावुकता को कुचलकर साइकिल पर सवार होकर बीस–पच्चीस मिनट बाद लौटकर आने की बात कहता है। पर जब तक देसराज वापस आता है तब तक वह व्यक्ति मर चुका होता है। यदि समय पर उस बीमार व्यक्ति को पानी दे दिया जाता तो शायद वह बच जाता, पर देसराज के काम काज की व्यस्त्ता के रहते एक व्यक्ति का जीवन बच न पाया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि तीनों कहानियाँ एक ही पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। कामकाज के कारण ही लाला कस्तूरीमल अपनी बीमार बहन को क्वेटा से नहीं ला सकते, यूसुफ़ अपने श्वसुर की बीमारी में समय पर उन्हें देखने नहीं जा पाता और देसराज बैंक के काम के कारण एक व्यक्ति की जान नहीं बचा सका। इन तीनों घटनाओं में एक जैसा कथानक है।

ज्वालामुखी के फूल

Question 13.

''भला इस झगड़े का निर्णय कैसा होगा। यह किशोर राजा क्या न्याय करेगा?'' यह आशंका कौन व्यक्त कर रहा है। किशोर राजा कौन है? झगड़ा किस–किसमें हो रहा है तथा क्यों? किशोर राजा ने इस झगड़े का क्या निर्णय किया? [12½]

<u>परीक्षकों की टिप्पणियाँ</u>

इस प्रश्न के चार भाग थे। परीक्षार्थियों ने इस प्रश्न का उत्तर लिखने का सफल प्रयास किया परन्तु कहीं न कहीं प्रश्न का पूरा उत्तर न दे पाए।

<u>अध्यापकों के लिए सुझाव</u>

– प्रश्न के प्रत्येक भाग के लिए अलग–अलग अंक होते हैं। कक्षा में प्रत्येक भाग का उत्तर लिखने का अभ्यास कराया जाए।

अंक योजना

Question 13

यह आशंका विष्णुगुप्त चाणक्य व्यक्त कर रहे हैं। किशोर राजा देवी मुरा का पुत्र चन्द्रगुप्त है। झगड़ा दो स्त्रियों के बीच हो रहा है।

दो स्त्रियों के बीच में एक बच्चा है। दोनों ही स्त्रियाँ उसे अपना बच्चा बता रही हैं। किशोर चन्द्रगुप्त और उसके साथियों ने देखा कि एक स्त्री गोद में छोटा सा बच्चा लिए आगे–आगे तेजी से चली जा रही थी, पीछे–पीछे एक कमजोर–सी स्त्री रोती हुई । वह बार–बार आगे खड़ी होकर बच्चे वाली स्त्री को रोक लेती, पकड़ती, उसके पाँव पकड़कर लटक जाती।

इस दृश्य को देखने से पूर्व खेल में बने राजा चन्द्र ने अपने किशोर महामात्य से पूछा था कि प्रजा में किसी को कोई दु:ख तो नहीं? किसी पर कोई अत्याचार तो नहीं?

bodhiyla.com

उत्तर में महामात्य ने कहा था कि किसमें साहस है जो प्रतापी राजा चन्द्रगुप्त मौर्य की प्रजा को दुःख दे। हमारे बलवान राजा की प्रजा पर कौन अत्याचार करेगा?

स्त्रियों को रोता देखकर चन्द्रगुप्त ने सहसा कहा कि तू कहता है कि प्रजा दुःखी नही है, फिर यह क्या हो रहा है? वह स्त्री क्यों रो रही है?

राजा के आदेश पर दोनों स्त्रियों को पकड़कर राजसभा में लाया गया। एक स्त्री रो–रोकर दूसरी स्त्री से कह रही थी कि मेरे लाल को मुझसे मत छीनो, बहन! तुम चाहे मेरा सब कुछ ले लो। वह बच्चे की रक्षा के लिए सभा के समक्ष गिड़गिड़ा रही थी।

राजा ने महामात्य से कहा कि इनसे पूछो, क्यों लड़ रही है? हम न्याय करेंगे।

पहली स्त्री बोली कि यह पगली मेरी दासी है। मेरे बच्चे की देखरेख करती थी, पर इस बीच यह दासी पागल हो गई। अब यह मेरे बच्चे को अपना बच्चा कहती है। एक दिन अवसर पाकर आँगन में सोते हुए बच्चे को ले भागी। बड़ी कठिनाई से पकड़ पाई हूँ। इसी के डर के मारे मैं गाँव छोड़कर शहर चली आई हूँ। यहाँ मेरा पति नाविक है। उसी के साथ रहूँगी। तुम लोग इसे रोको, भैया, मैं जान बचाकर चली जाऊँ।

वह जाने लगती है, पर सैनिक उसे रोक लेते हैं। दूसरी स्त्री की ओर देखकर राजा ने आज्ञा दी कि अब तू बता। किसी तरह रोते–रोते वह बोली कि यह मेरा बच्चा है। यह स्त्री बांझ है। यह झूठ कहती है। इसके कभी बच्चा हुआ ही नहीं। अब यह ईर्ष्या–जलन के मारे मेरे बच्चे को छीनना चाहती है। कब से मेरे बच्चे का मुँह दबोचे भाग रही है। वह दुःख से बिलख–बिलखकर रो रहा है।

फिर वह पहली स्त्री से बोली कि तुम कहती हो मैं तुम्हारी दासी हूँ, ऐसा ही सही। पर एक बार मुझे अपने बच्चे को दूध पिला लेने दो। मेरे लाल का गला सूख रहा होगा। वह उसकी ओर बढ़ी, परन्तु पहली स्त्री ने उसे धकेल दिया। द्वारपाल ने उसे गिरने से संभाला।

दोनों की बात सुनकर महामात्य ने कहा कि राजा न्याय करें।

चन्द्रगुप्त ने दोनों स्त्रियों को बारी–बारी तीखी दृष्टि से देखा। दोनों ही अपने–अपने हठ पर अड़ी थीं।

राजा ने आज्ञा दी कि बच्चे को मेरे पास लाओ। द्वारपाल बच्चा ले आया। राजा ने आज्ञा दी कि वधिक को बुलाओ। आज तक खेल में वधिक की जरूरत नहीं पड़ी थी इसलिए कोई किशोर वधिक नहीं नियुक्त किया गया था। किशोर महामात्य को सहसा उपाय सूझा। उसने पास खड़े राही को संकेत से बुलाया तथा उसे वधिक बना दिया।

राजा ने आज्ञा दी कि बच्चा वधिक को दे दो। राजा की एकाग्र दृष्टि स्त्रियों पर लगी हुई थी। उन्हीं की ओर निगाह टिकाए–टिकाए राजा ने कठोर स्वर में आज्ञा दी, वधिक! तू इस शिशु को बीच से चीरकर इन दोनों स्त्रियों में बराबर–बराबर बाँट दे।

राजा की निर्मम आज्ञा सुनकर सभी सहम गए। वधिक बने राही ने अचकचाकर राजा की ओर देखा और स्त्रियों की ओर घूरने लगा।

राजा ने गरज कर कहा कि आज्ञा का पालन किया जाए।

भयावने पथिक की लाल–लाल आँखों से आँखें मिलते ही सहसा दासी दहाड़ मारकर रो पड़ी। रोते–रोते बोली कि मेरे लाल को मारो मत, उसे ही दे दो, उस डायन को ही दे दो, मेरा लाल जीता तो रहेगा। यह कहकर वह अचेत होकर गिर पड़ी।

राजा हँस पड़ा। महामात्य से कहा कि बच्चा इसी दासी का है। यही माँ है। और उस निर्मम स्त्री को ले जाकर राजपुरुषों के हाथ सौंप दो। उसकी करनी का उसको दण्ड मिलेगा।

इस तरह से किशोर चन्द्रगुप्त ने इस झगड़े का निर्णय करते हुए बच्चे को असली माँ को दे दिया।

bodhiyla.com

Question 14.

"मगध के उपमहामात्य आर्य शकटार की सहायता मिलती रहने के कारण चाणक्य को किसी प्रकार की असुविधा नहीं थी।" आर्य शकटार चाणक्य को आर्थिक सहायता तथा अन्य सुविधएँ क्यों दे रहे थे? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणिया

इस प्रश्न में कुछ परीक्षार्थियों ने शकटार के साथ घटित कथा का वर्णन किया पर चाणक्य के साथ क्या घटना घटित हुई थी, उसका वर्णन ही नहीं किया, जिससे ये स्पष्ट नहीं हो पाया कि वे दोनों एक ही उद्‌देश्य से एक दूसरे की मदद कर रहे थे।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– छात्रों को बताए कि पहले दोनों पक्षों (चाणक्य व शकटार) के साथ घटित घटना का वर्णन करने के बाद ही इस बात का उल्लेख करें कि शकटार क्यों चाणक्य को आर्थिक सहायता एवं सुविधाऐं दे रहे थे।

अंक योजना

Question 14

सम्राट् महापद्म नन्द ने महामात्य शकटार को बिना किसी कारण सपरिवार कारावास में डलवा दिया था। भूख–प्यास से तड़प तड़प कर कारावास मे ही उनके आठों पुत्रों और पत्नी की मौत हो गई थी।

एक दिन सम्राट् ने महामात्य आर्य राक्षस को बुलवाकर उन्हें आदेश दिया कि कारावास से आर्य शकटार को मुक्त करके ससम्मान राजसभा में प्रस्तुत किया जाए।

आर्य राक्षस ने सम्राट् की इस आज्ञा का तो स्वागत किया कि आर्य शक्टार को कारावास से मुक्त कर दिया जाए, पर राजसभा में पद देने का विरोध किया।

सम्राट् ने आर्य राक्षस की एक नहीं सुनी और आदेश दिया कि आज्ञा का पालन किया जाए।

विवश होकर आर्य राक्षस ने सम्राट् की आज्ञा के अनुसार चर को आदेश दिया। पर साथ ही दासी विचक्षणा को आर्य शकटार की सेवा में नियुक्त कर उससे उनकी जासूसी करने को कहा। यद्यपि पहले उसने आर्य राक्षस के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था परन्तु पुत्र मोह ने उसे ऐसा करने के लिए मजबूर कर दिया।

आर्य शकटार कुछ दिन विश्राम करने के पश्चात राजसभा में जाने लगे और राज–काज में डूब से गए।

रात्रि में विश्राम के समय उनकी आँखों में नींद के स्थान पर पुत्रों और पत्नी की याद आती थी। उनके मन में प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठती, पर वे असहाय से रह जाते।

महारानी द्वारा आयोजित शक्ति–पूजन और दान समारोह के एक दिन पूर्व आर्य शकटार की भेंट आचार्य चाणक्य से होती है। उन्हें कुश उखाड़कर तथा उसमें मट्ठा डालते देखकर शकटार ने इसका कारण पूछा। चाणक्य ने पैर मे कुश लगने तथा इसके कारण समय से न पहुँचने पर विवाह में असफल होने की अपनी व्यथा–कथा सुनाई।

आचार्य चाणक्य ने शत्रु के सम्बन्ध में एक बहुत अच्छी नीति बताई कि जो व्यक्ति अपने शत्रु अथवा बाधा का समूल नाश नही कर देता, वह अपने ही नाश का उपाय करता है।

आर्य शकटार स्तब्ध रह गए। मगध सम्राट् नन्द ने उनका समूल नाश नहीं किया, पर क्या वह नन्दराज का विनाश कर सकेंगे? प्रतिशोध की आग से शकटार का हृदय धधक उठा।

bodhiyla.com

सोचने लगे कि नन्दवंश का समूल नाश किए बिना उन्हें शान्ति नहीं मिलेगी। पर बुद्धिमानों को अपने सामर्थ्य से परे जो भी कार्य लगे, उसे करने के लिए और भी शक्ति जुटा लेनी चााहिए। ठीक उसी प्रकार, जैसे वह ब्राह्मण कुशों की जड़ों को जलाने के लिए मट्ठे का सहारा ले रहा है।

दान लेने के लिए सुपात्र ढूँढने का भार शकटार पर था। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि यह व्यक्ति विद्वान् चाणक्य है तो उन्होने विशेष आग्रह करके उनको दान लेने के लिए राजी कर लिया और रथ पर बैठाकर अपने साथ ले आए।

दूसरे दिन निश्चित समय पर ब्राह्मण चाणक्य दानशाला पहुँच गए। परिचारिका ने जब सम्राट से निवेदन करते हुए सुपात्र को दान करने के लिए सामने बैठे ब्राह्मण चाणक्य की ओर संकेत किया तो उसे देखते ही सम्राट चौंक पड़े।

सहसा क्रोध से काँप कर वह गरज उठे, ''इस नीच, कुरूप व्यक्ति को यहाँ क्यों बैठा रखा है? इसे तुरन्त मेरी आँखों के आगे से दूर करो। इस पिशाच के केश पकड़ कर बाहर निकाल दो।''

भरी सभा में निमन्त्रित व्यक्ति का सम्राट् ने अपमान किया था।

चाणक्य ने सहसा अपने सिर पर बंधी शिखा को खोलकर झटक दिया। क्रोध से काँपते गम्भीर स्वर में कहा, ''मैं विष्णुगुप्त चाणक्य! प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक अभिमानी नन्दों का समूल नाश नहीं कर दूँगा तब तक फिर से शिखा नही बाँधूगा।''

आचार्य चाणक्य ने नन्दों के नाश की प्रतिज्ञा की थी। आर्य शकटार भी नंद–वंश का नाश करना चाहते थे। दोनों का एक ही लक्ष्य था। शत्रु के शत्रु को मित्र बनाकर आर्य शकटार अपने लक्ष्य की पूर्ति करना चाहते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि आचार्य चाणक्य अपनी विलक्षण बुद्धि से एक दिन नंद–वंश का नाश अवश्य कर देंगे। इसीलिए आर्य शकटार चाणक्य को आर्थिक सहायता तथा अन्य सुविधाएँ दे रहे थे। । इस तरह से चाणक्य की प्रतिज्ञा और शकटार का प्रतिशोध पूरा हो जाएगा।

Question 15.

आर्य राक्षस ने मगध का महामात्य बनना क्यों स्वीकार कर लिया? उन्होंने पद स्वीकार कर पहला निर्णय क्या दिया था? [12½]

परीक्षकों की टिप्पणियाँ

'ज्वालामुखी के फूल' का यह उत्तर स्पष्ट रूप से लिखा गया। अधिकतर छात्रों ने बहुत अच्छे ढ़ंग से उत्तर का प्रस्तुतिकरण किया।

अध्यापकों के लिए सुझाव

– उपन्यास पढ़ाते समय कारण व उद्देश्य साथ–साथ स्पष्ट किए जाएँ।

अंक योजना

Question 15

राक्षस को शंकरदास से ज्ञात हुआ था कि चन्दनदास पर राजा की ओर से बड़ा दबाव डाला गया, फिर भी उन्होने आर्य का परिवार सौंपने से इन्कार कर दिया। उनके घर पर आपका परिवार नही मिला। प्राणदण्ड की आज्ञा होने पर भी उन्होंने आपके परिवार की रक्षा की। मुँह से एक शब्द भी न निकाला।

मलयकेतु ने जब आर्य राक्षस को अपमानित करके अपने शिविर से निकाल दिया तो वे सीधे पाटलिपुत्र की ओर बढ़ चले।

ओदनालय के लंगड़े स्वामी से उसे ज्ञात हुआ कि इस समय मगध के मौर्य सम्राट् का सूर्य चमक रहा है, कुछ भी हो सकता है।

ओदनालय से चलने को हुए ही थे कि कहीं से नगाड़ा बजने का विचित्र शब्द सुनाई पड़ा।

bodhiyla.com

लंगड़े स्वामी ने कहा ये देखो। यह भी कैसा महापुरुष है। अपने मित्र राक्षस के परिवार को बचाने के लिए अपने प्राण तक दे रहा है। कौन सोचता था कि कुसुमपुर के इतने बड़े लक्ष्मीपुत्र चन्दनदास को सूली लगेगी।

'चन्दन'! राक्षस फुसफुसा उठे। राक्षस उठकर ओदनालय से निकल तेजी से श्मशान की ओर भागे।

भीड़ चीरकर राक्षस टकराते, ठोकर खाते सहसा बीचोबीच वधिकों के सामने जा खड़े हुए और चिल्लाकर बोले, ''चन्दनदास को छोड़ दो, मैं राक्षस हूँ, मुझे ले चलो अपने राजा के पास, मुझे चढ़ा दो सूली पर।''

सैनिकों की एक सशस्त्र टुकड़ी ने झपट कर उन्हें घेर लिया और राजसभा की ओर ले चले।

राक्षस को घेर कर सैनिक भीतर आए।

कौटिल्य ने दूर से ही राक्षस के प्रभावशाली व्यक्तित्व को देखा और आगे बढ़कर बोले–––राजनीति के महापण्डित आर्य राक्षस को विष्णुगुप्त चाणक्य का प्रणाम स्वीकार हो।

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने भी महामात्य राक्षस को झुककर वन्दना की।

चाणक्य ने आचार्य राक्षस से मगध के महामात्य का पद स्वीकार करने का आग्रह किया।

आचार्य राक्षस ने संशय प्रकट करते हुए कहा कि उनके मन में सम्राट् नन्द के प्रति अपार मोह था फिर भी क्या मौर्य सम्राट् उन पर विश्वास कर सकेंगे।

सम्राट ने आर्य राक्षस की उपमा हीरे से दी और कहा कि हीरा किसी के भी पास रहे, उसका मूल्य कभी कम नहीं होता, जिसके पास रहता है, उसी का बनकर रहता है। इसमें हीरे का क्या दोष? उसका मूल्य घट तो नही जाता, आर्य!

आर्य चाणक्य ने राक्षस को बताया कि उनके ऊपर सदा निगाह रखी गई है। न तो वह आत्महत्या कर सकते थे, न ही कोई उन्हें नुकसान पहुँचा सकता था। हर पल उनकी रक्षा का ध्यान रखा गया। जब पता चला कि आर्य राक्षस पाटलिपुत्र में आ गए तो चन्दनदास को वधभूमि पर ले जाया गया। यदि वह आत्मसमर्पण न करते तो सेठ की रक्षा का उपाय निश्चित था, सम्राट की आज्ञा से प्राणदण्ड रोक दिया जाता।

तत्पश्चात आर्य चाणक्य ने कहा कि यदि वे राजचिन्ह धारण नहीं करेंगे तो सेठ चन्दनदास के प्राणों की रक्षा नहीं हो सकेगी।

आर्य राक्षस ने अपने परम मित्र सेठ चन्दनदास के प्राणों की रक्षा करने हेतु मगध का महामात्य बनना स्वीकार कर लिया।

युवराज मलयकेतु बन्दी बना लिए गए थे। चर ने प्रवेश करके कहा , ''राजपुत्र भगुरायण ने संवाद दिया है, बन्दी मलयकेतु पाटलिपुत्र लाए गए हैं। उनके सम्बन्ध में क्या आज्ञा है?''

आचार्य कौटिल्य ने महामात्य राक्षस की ओर संकेत करते हुए कहा कि अब मगध के महामात्य राक्षस ही आज्ञा देंगे। महामात्य राक्षस ने धीरे से कहा एक दिन ऐसा भी था, जब कुमार मलय को मेरा स्नेह मिला था। जिसका आशय यह था कि मलयकेतु को ससम्मान मुक्त कर दिया जाए।

सम्राट ने कौटिल्य की ओर देखा। आँखों में बात हुई। कौटिल्य ने कहा कि मगध के महामात्य की पहली मांग ठुकराई नही जा सकती। उन्होंने चर से कहा कि वह राजपुत्र भागुरायण को सम्राट् का आदेश सुना दे कि वह कुमार मलयकेतु को मुक्त कर दें और स्वयं उनकी राजधानी तक जाकर उन्हें राजसिंहासन पर बैठाकर लौट आएँ।

bodhiyla.com

General Comments:

(a) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों को कठिन लगे?

1. Q.1: निबन्ध में (d) एवं (f) से (i) चढ़ते सूरज को सब सलाम करते हैं।
2. Q.3: वाक्यों का शुद्धिकरण एवं मुहावरे No. (iv)।
3. Q.9, Q.11, Q.13, Q.14

(b) प्रश्न पत्र में कौन से विषय परीक्षार्थियों के लिए अस्पष्ट रहे?

1. Q.2 से (e)
2. Q.3 में से वाक्यों को शुद्ध करना व मुहारों के वाक्य बनाने में अस्पष्टता दृष्टिगोचर हुई।

(c) विद्यार्थियों के लिए सुझाव :–

– प्रत्येक किताब से उत्तर लिखते समय व निबन्ध हेतु समय–सामंजस्य का विशेष ध्यान रखें।

– किसी भी प्रश्न के उत्तर को अनावश्यक रूप से विस्तार न दें। व्याकरण के लिए अभ्यास की विशेष आवश्यकता है।

– वाक्यों को शुद्ध करके लिखना एवं मुहावरों के वाक्यों का अभ्यास करते रहें।

– कहानी व कविता के संक्षिप्त सार के साथ–साथ पंक्तियाँ भी याद करें।

bodhiyla.com